वृन्दा

वर्ष 21, अंक-7, पत्रिका पंजीकरण संख्या MP HIN 2003/11939

जुलाई : 2023

Red No M. P. HIN 2003/11939

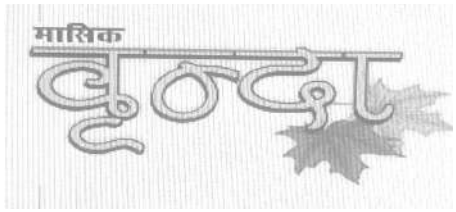

सम्पादन परामर्श
श्री सुधेंदु ओझा-07701960982
सम्पादक
अंजना छलोत्रे
-84 61912125
कार्यकारी सम्पादक
आशा शैली- 7055336168
सम्पादकीय कार्यालय
जी-48, फारच्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल-462039
मो-9827034165

मुद्रक/प्रकाशक/स्वत्वाधिकारी
सम्पादक -अंजना 'सवि'
जी-48, फारच्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल-462039
वृन्दा के सभी विवादों का वैधानिक क्षेत्र भोपाल रहेगा
लेखन सामग्री के लिए सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।

मूल्य-एक प्रति 12/-,
वार्षिक 120/-,
संस्था और पुस्तकालय हेतु 120/- वार्षिक

इस अंक में

विधा	लेखक	पृष्ठ
सम्पादकीय		
नींव के पत्थर	राहुल त्यागी	3
अनुवादित कविताएँ	**डॉ.रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'**	**4**
सभ्यता के लिए.... -नमन कृष्ण 'भागवत किंकर'		**5**
राष्ट्र खुशहाल लिख रही हूँ -प्रियंवदा शर्मा		5
भूलते रिश्तों की चीखें	-श्यामल बिहारी महतो	6
अभिलाषा	-डॉ दिनेश पाठक 'शशि'	7
खतरनाक	-कृष्ण कुमार यादव	7
ये सखी	-अंजना छलोत्रे 'सवि'	8
लंगोटी वाला वैद्य	-डॉ. आर वासुदेव प्रशांत	11
पारस	-आशा शैली	13
अगस्त्यमुनि क्षेत्र का ...	डॉ. हेमंत चौकियाल	17
माँ मेरे चेहरे से झांकती है	इंदु परिहार	20
आहुति	सुमन किमोठी	20
दो गीत	सूर्य प्रकाश मिश्र	21
वैदिक काल से.....	आचार्या रेखा कल्पदेव	22
अपनं कंकाल के .....डॉ वकास मानव		26
यूँ ही मन कुछ बोझिल.....लोकेष्णा मिश्रा		28
बात किताब की	आशा शैली	30
साहिय समाचार		32

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, तथा स्वत्वाधिकारी सम्पादक अंजना द्वारा वृन्दा के लिए खो प्रिंटर्स तलैया चौक से मुद्रित व जी-48, फारच्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल 462 039 से प्रकाशित।

युवा शक्ति का अभिनन्दन

जुलाई माह में विश्व युवा कौशल दिवस हर साल 15 जुलाई को मनाया जाता है। इसका शुभारम्भ 2014 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा किया गया था। यह दिन युवा कौशल विकास में निवेश के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करने और युवा शक्ति के प्रयासों को पहचानने के लिए मनाया जाता है। युवाओं को उनके जीवन को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक कौशल से सुसज्जित करने के महत्व के बारे में उनकी जागरूकता को बढ़ाने के लिए प्रतिवर्ष 15 जुलाई को विश्व युवा कौशल दिवस मनाया जाता है। यह सम्पूर्ण विश्व के युवाओं के बेहतर भविष्य को सुनिश्चित करने और निवेश के महत्व को पहचानने का दिन है। यह दिन युवाओं को उनके व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास में मदद करने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करने पर केंद्रित है। यह युवाओं को अपने कौशल विकसित करने और अधिक रोजगार योग्य बनने के लिए उपलब्ध अवसरों का लाभ उठाने के लिए भी प्रोत्साहित करता है। यह दिन दुनिया के युवाओं में निवेश के महत्व और उन्हें बेहतर भविष्य सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक उपकरण प्रदान करने की याद दिलाता है। यह उन युवाओं की सफलताओं का जश्न मनाने का भी दिन है जिन्होंने अपने कौशल का उपयोग अपने समुदायों पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए किया है।

इसी माह विश्व इमोजी दिवस हर साल 17 जुलाई को मनाया जाता है। यह दिन इमोजी आइकन और संचार में उनके उपयोग का जश्न मनाने के लिए बनाया गया था। इमोजी छोटी डिजिटल छवियाँ हैं जिनका उपयोग इलेक्ट्रॉनिक संचार, जैसे टेक्स्ट संदेश, मेल और सोशल मीडिया पोस्ट में भावनाओं या विचारों को व्यक्त करने के लिए किया जाता है। इनका उपयोग भावनाओं, विचारों और वस्तुओं को दिखाने के लिए किया जाता है। इनका उपयोग हास्य और अन्य गैर-मौखिक संकेत व्यक्त करने के लिए भी किया जाता है जो लोगों को संवाद करने में मदद करते हैं। इस दिन, लोग अपने पसंदीदा इमोजी साझा करते हैं, उनके अर्थों पर चर्चा करते हैं और संचार पर उनके प्रभाव का जश्न मनाते हैं। विश्व इमोजी दिवस दोस्तों और परिवार के साथ जुड़ने और हँसी साझा करने का एक शानदार अवसर है। इमोजी हमारी संस्कृति का हिस्सा बन गए हैं और बिना शब्दों के खुद को अभिव्यक्त करने का एक तरीका बन गए हैं। विश्व इमोजी दिवस पर, लोग कला, संगीत और अभिव्यक्ति के अन्य रूपों जैसे रचनात्मक तरीकों से इमोजी का उपयोग करके जश्न मनाते हैं। यह दिन इमोजी के उपयोग की सराहना करने के लिए एक अनुस्मारक के रूप में भी कार्य करता है और वे हमें बेहतर संवाद करने में कैसे मदद कर सकते हैं। कहना न होगा कि इसमें भी युवा बढ़-चढ़कर भाग लेते देखे जा सकते हैं। अर्थात् जुलाई का महीना सावन, बहार और युवा शक्ति तीनों एक दूसरे के पर्याय ही लगते हैं। आइए, आगे बढ़कर युवा शक्ति का अभिनन्दन करें।

अंजना छलोत्रे

नींव के पत्थर : बटुकेश्वर दत्त

भगत सिंह के साथ असेंबली में बम फेंकने वाले बटुकेश्वर दत्त को भी फांसी हो गई होती तो ज्यादा अच्छा था। 1947 में आजादी के पश्चात बटुकेश्वर को रिहाई मिली। लेकिन इस वीर सपूत को वो दर्जा कभी नहीं मिला जो हमारी सरकार और भारतवासियों से इन्हें मिलना चाहिए था।

आज़ाद भारत में बटुकेश्वर नौकरी के लिए दर-दर भटकने लगे। कभी सब्जी बेची तो कभी टूरिस्ट गाइड का काम करके पेट पाला। कभी बिस्किट बनाने का काम शुरू किया लेकिन सब में असफल रहे।

कहा जाता है कि एक बार पटना में बसों के लिए परमिट मिल रहे थे, उसके लिए बटुकेश्वर दत्त ने भी आवेदन किया। परमिट के लिए जब पटना के कमिश्नर के सामने इस 50 साल के अधेड़ की पेशी हुई तो उनसे कहा गया कि वे स्वतंत्रता सेनानी होने का प्रमाण पत्र लेकर आएं..!!! भगत के साथी की इतनी बड़ी बेइज़्ज़ती भारत में ही संभव है। हालांकि बाद में राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद को जब यह बात पता चली तो कमिश्नर ने बटुकेश्वर से माफ़ी मांगी थी। 1963 में उन्हें विधान परिषद का सदस्य बना दिया गया। लेकिन इसके बाद वो राजनीति की चकाचौंध से दूर गुमनामी में जीवन बिताते रहे। सरकार ने इनकी को सुध नहीं ली।

1964 में जीवन के अंतिम पड़ाव पर बटुकेश्वर दिल्ली के सरकारी अस्पतालों में कैंसर से जूझ रहे थे तो उन्होंने अपने परिवार वालों से एक बात कही थी।

''कभी सोचा ना था कि जिस दिल्ली में मैंने बम फोड़ा था उसी दिल्ली में एक दिन इस हालत में स्ट्रेचर पर पड़ा होऊंगा।"

मै देशवासियों का ध्यान इनकी ओर दिलाया चाहता हूँ कि- किस तरह एक क्रांतिकारी को जो फांसी से बाल-बाल बच गया, जिसने कितने वर्ष देश के लिए कारावास भोगा; वह आज नितांत दयनीय स्थिति में अस्पताल में पड़ा एड़ियां रगड़ता रहा और उसे कोई पूछने वाला नहीं था।

जब भगतसिंह की माँ अंतिम वक़्त में उनसे मिलने पहुँची तो भगतसिंह की माँ से उन्होंने सिर्फ एक बात कही-''मेरी इच्छा है कि मेरा अंतिम संस्कार भगत की समाधि के पास ही किया जाए।'' फिर उनकी हालत लगातार बिगड़ती गई। 17 जुलाई को वे कोमा में चले गये और 20 जुलाई 1965 की रात एक बजकर 50 मिनट पर उनका देहांत हो गया।

राहुल त्यागी

(डॉ.रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक' द्वारा अनुवादित कविताएँ)

डॉ.रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'
अमर भारती चकित्सालय,
टनकपुर रोड, खटीमा,
जिला ऊधमसिंह नगर
(उत्तराखण्ड) 91 79063 60576

मृत्यु एक मछुआरा

-बेंजामिन फ्रैंकलिन

DEATH IS A FISHERMAN
– BY BENJAMIN FRANKLIN
(1706-1790)

दुनिया एक सरोवर है,
और मृत्यु इक मछुआरा है!
हम मछली हैं अवश-विवश सी,
हमें जाल ने मारा है!!
मछुआरे को हम जीवों पर
कभी दया नही आती है!
हमें पकड़कर खा जाने को,
मौत नही घबराती है!!
तालाबों में झूम रहा है
जाल मृत्यु बन घूम रहा है!
मछुआरा चुन-चुन कर सबको
बेदर्दी से भून रहा है!!
आये हैं तो जाना होगा
मृत्यु अवश्यम्भावी है!
इक दिन तो फँसना ही होगा,
जाल नही सद्-भावी है!!

टुकड़ा

-एमी लोवेल

FRAGMENT - Amy Lowell

कविता क्या है?
कविता रंग-बिरंगे,
मोहक पाषाणों सी होती है क्या?
जिसे सँवारा गया मनोरम,
रंग-रूप में नया-नया!!
हर हालत में निज सुन्दरता से,
सबके मन को भरना!
ऐसा लगता है शीशे को,
सिखा दिया हो श्रम करना!!
इन्द्रधनुष ने सूर्य रश्मियों को
जैसे अपनाया है!
क्या होता है अर्थ, धर्म का?
यह रहस्य बतलाया है!!

जग की जरूरत

-एला व्हीलर विलकॉक्स

THE WORLDS NEED)
Ella Wheeler WilcoÛ

जन्म-1855
मृत्यु-1919

बहुत से भगवान,
बहुत से भक्त!
बहुत सी हवाएँ,
बहुत से पथ!
इन कलाओं के पीछे,
क्यों है अनुरक्त!
क्योंकि जग की जरूरत हैं,
सभी दुखी और विरक्त!

सभ्यता के लिए मासूम प्रार्थना

-नमन कृष्ण 'भागवत किंकर'

माँ!
हम उड़ क्यों नहीं सकते?
क्योंकि हम वयस्क और सभ्य हो गए हैं
.....
मासूम, खुशगवार और दिलदार
लोग ही
उड़ सकते हैं
.....
माँ!
हम मासूम नहीं हैं?
मासूम जन्मे तो थे
सभ्यताओं ने छीन ली
हमसे मासूमियत
.....
माँ!
खुशगवार होना क्या होता है?
पफूलों का पेड़ पर टिका होना
आलीशन गुलदस्तों के बजाय
.....
अंत में दिलदार होने से महत्वपूर्ण है
सभ्यता में सभ्य दिखाई पड़ना
ज्यादा जरूरी है बजाय इसके कि
आसमां में उड़ सकें

राष्ट्र खुशहाल लिख रही हूँ

-प्रियंवदा शर्मा

सुनो!
राष्ट्र खुशहाल लिख रही हूँ
तुम हल करना पहेली
मैं फिर विक्रम-बेताल लिख रही हूँ
नोंच रहे दरिंदे फिर भी
भ्रूण हत्या पाप लिख रही हूँ
करती हूँ देवी पूजा इसलिए
सिर्फ कैंडल मार्च लिख रही हूँ,
तुम हल करना पहेली
मैं फिर विक्रम बेताल लिख रही हूँ
विपक्ष की हर चाल को शिखंडी लिख रही हूँ
भीष्म पितामह नहीं जनता शरशैया पर
निढाल लिख रही हूँ,
तुम हल करना पहेली
मैं फिर विक्रम बेताल लिख रही हूँ
मजहब का ध्वज लिए खड़े
शकुनि की साजिश का हाल लिख रही हूँ
विचारधारा की कशमकश का
विस्तार लिख रही हूँ,
तुम हल करना पहेली मैं
फिर विक्रम बेताल लिख रही हूँ।
बस.... अंधेरों में कल्पना लिख रही हूँ
कांटों में गुलाब लिख रही हूँ,
तुम हल करना पहेली
मैं फिर विक्रम बेताल लिख रही हूँ
राष्ट्र खुशहाल लिख रही हूँ

H- N- 273, 11 Muhalla
Swar Purana Bazar Sundernagar
Distt Mandi
mo. 175019
priyamvda@gmail-com

भूलते रिश्तों की चीखें

-श्यामल बिहारी महतो

घर में शादी का माहौल था। आँगन में लगन बंधाने की रस्म की तैयारी चल रही थी। तीन दिन बाद सरला की शादी थी। लड़का-सी आर पी एफ का जवान था। दो माह पहले ही ज्वाइनिंग हुई है। शादी के बाद उसे सीधे ट्रेंनिग में शामिल होना था। नौकरी वाला दामाद मिलने से घर में सभी खुश थे। घर घर में हँसी खुशी का माहौल था। परन्तु सरला की फूफी मीरा देवी बेहद नाराज़ दिख रही थी। जब से आई है सीधे मुँह किसी से बात ही नहीं कर रही थी। मेहमानों वाले घर में अब भी अकेली बैठी कहीं खोई हुई सी थी। दूर के रिश्तेदारों का आना शुरू हो गया था।

तभी आँगन से रेणुका देवी की आवाज सुनाई पड़ी। वे सातवीं में पढ़ रही अपनी बेटी सारिका जो से कह रही थी, ''देखो जाकर, तुम्हारी फूफी कहाँ है, बुला लाओ। चोक पुराई करनी है।"

सारिका सरपट मेहमान वाले घर में दौड़ गई पर उल्टे पाँव भाग भी आई और रोने लगी। उसके कानों में अब भी मीरा देवी की फटकार गूंज रही थी, ''क्या बुआ आंटी-बुआ आंटी लगा रखी है। चल भाग यहाँ से ...।"

माँ ने पूछा, ''क्या हुआ, किसी ने कुछ कहा क्या?"

''हाँ! मैंने कहा...।" फूफी ने आँगन में कदम रखते हुए कहा।

''क्या हुआ दीदी, किसी ने कुछ कहा है क्या? देख रही हूँ आप जब से आई हैं खुश नहीं हैं।"

''बेटियों को क्या पढ़ा रही है? जब संस्कार ही नहीं बचेगा तो रिश्ते और रिश्तेदार कैसे बचेंगे?"

''हम कुछ समझे नहीं, आप कहना क्या चाहती है दीदी? हमसे कोई गलती हुई हो तो आप बड़ी हैं, समझा सकती है और डांट भी सकती हैं पर ऐसे मौके पर...!"

''यही तो, यही तो। आज के बच्चों को क्या पढ़ाया जा रहा है? शहर में पढ़ने लगी तो बड़े छोटे की पहचान भूल जाओ। गाँव समाज के संस्कार भूल जाओ। दादा-दीदी, काका-काकी कहने में शर्म आने लगे तो वैसे स्कूल की पढ़ाई से अच्छी है गाँव के स्कूल की पढ़ाई। यहाँ ऐसी आंटी घंटी की पढ़ाई पर जोर तो नहीं दिया जाता है। देखो तो भला, फूफा-फूफी कह बुलाने में शर्म लगती है। उसे सीधे मौसी बुलाना तोहीन लगता है। उसे सीधे मामी कह बुलाना गंवारपन लगता है।

जिसे देख वही, बुआ आंटी, मौसी आंटी -मामी आंटी। यह सब क्या है? आज फूफी बुलाने में शर्म आ रही है। कल फूफी को घर बुलाने में शर्म आने लगेगी। कल ही की बात है, रघुवीर काका का बेटा बोकारो सिटी कॉलेज में पढ़ता है। घर आये अपने फूफा को फूफा न कहकर 'अंकल-अंकल' कह दो बार पुकारा। फूफा ने कोई जवाब नहीं दिया। यह देख उसकी माँ झाड़ू लेकर निकली और बेटे की ओर लपकी। 'नालायक, बहुत पढ़ लिया। फूफा कहने में शर्म आती है?' और एक झाड़ू लगा दी।"

''सारिका फूफी का पाँव छूकर माफी मांगो और आइंदा कभी बुआ आंटी नहीं सीधे फूफी बुलाएगी ..जाओ।"

''माफ करो फूफी। आगे से ऐसी गलती नहीं करूँगी।" और सारिका ने सचमुच कान पकड़ लिए। यह देख सब ठहाका लगा हंस पड़े।

''आओ दीदी ..चोक पुराओ ....!"

बोकारो झारखंड
फोन नं 6204131994

अभिलाषा -डॉ.दिनेश पाठक 'शशि'

मेरे होश सम्भालते ही मेरे पिताजी ने मुझे अपनों से बड़ों के पैर छूकर अभिवादन करना सिखाया था। चाहे मुझसे बड़े भाई हों, बहन हों, भाभी हों, गाँव-मुहल्ले, पड़ोस के बुजुर्ग हों या फिर रिश्तेदारी का कोई सदस्य।

राह चलते व्यक्तियों को भी वे मुझसे हाथ जोड़कर अभिवादन कराते थे और इस सबके बदले में मुझे उन सबके स्नेहपूर्ण हाथ, आशीर्वाद स्वरूप अपने सिर पर महसूस होते थे तथा उनके मुख से निकली अनवरत दुआएँ भी मुझे सुनने को मिलती ही थीं।

सबके आशीर्वाद से मैं बड़ा हो गया। देवी स्वरूपा पत्नी से दो पुत्रों ने भी जन्म लिया पर पूर्व जन्मों के भोग-भाग्यवश मुझे पत्नी की अस्वस्थता के कारण जीवन का अधिकांश समय अस्पतालों के आई.सी. यू. आदि में ही गुजारना पड़ा। पुत्रों का ध्यान कुछ भी न रख सका बल्कि पुत्रों ने ही अपनी छोटी सी उम्र से रसोईघर में अपना भोजन स्वयं बनाया और मेरी सहायता की।

पिताजी द्वारा दिए गये आदर्शों को मैं अपने पुत्रों में प्रत्यारोपित न कर सका फलतः मेरे छोटे पुत्र को अपने बड़े भाई और भाभी के पैर छूने की बजाय हाथ मिलाना और हाय-हलो करना ज्यादा अच्छा लगता है। मेरे बड़े पुत्र व उसकी पत्नी को, मेरे बड़े भाई व भाभियों की तरह मुझे अपने सीने से लगाकर स्नेह देने जैसा प्यार अपने छोटे भाई/देवर को देते मैंने नहीं देखा।

''मिलहि न जगत सहोदर भ्राता'' तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में लिखा है। मैं भी चाहता हूँ कि मेरे बच्चे एक-दूसरे के प्रेम सागर में डूब जाएँ लेकिन इनके व्यवहार को देख-देख कर मेरा हृदय अन्दर ही अन्दर रुदन करता है। सोचता हूँ, शायद मेरी मृत्यु के बाद इनमें बदलाव आये। लेकिन इस सबके लिए मेरा दोष क्या है? मृत्यु पूर्व क्या इस सवाल का उत्तर मुझे मिलेगा?

28, सारंग विहार, मथुरा-281006
मोबा.09412727361 एवं 09760535755
ईमेल- drdinesh57@gmail.com

खतरनाक -कृष्ण कुमार यादव

वह शहर के नामचीन डॉक्टर थे। लोग कहते थे डॉक्टर साहब मरे हुए व्यक्ति को भी जिंदा करने की कला जानते हैं। उस दिन सुबह ही सुबह उनके पास दो इमरजेन्सी केस आए।

पहला केस गाँव के एक गरीब व्यक्ति का था, जिसको साँप ने डस लिया था। उसका पूरा परिवार बद्हवास सा गिड़गिड़ा रहा था-

''डॉक्टर साहब! इन्हें बचा लीजिए, नहीं तो हम अनाथ हो जाएंगे।" डॉक्टर साहब ने साँप के डसने की जगह पर एक छोटा सा चीरा लगाया, फिर इंजेक्शन और दवाएँ। वह व्यक्ति अब स्वस्थ था।

दूसरा केस एक अभागी दुल्हन का था। शहर के जाने-माने व्यवसायी उसके ससुर ने उसे जिंदा जलाने की कोशिश की थी। बहू के माता-पिता बद्हवास से गिड़गिड़ा रहे थे-

''डॉक्टर साहब! हमारी बेटी को बचा लीजिए यह हमारी इकलौती संतान है।"

डॉक्टर साहब ने उन्हें धीरज बंधाया और ऑपरेशन-थिएटर में घुस गए। ऑपरेशन-थिएटर के बाहर पूरे तीन घंटे तक लाल बत्ती जलती रही। तीन घंटे बाद जब डॉक्टर साहब थिएटर से बाहर निकले तो उनके माथे पर चिंता की लकीरें थीं। परिवार वाले कुछ पूछते, उससे पहले ही उनके मुँह से निकला,

''जानवर का काटा एकबारगी बच भी जाए, पर आदमी का काटा.....!!!''

ये सखी

–अजना छलोत्रे 'सवि'

बहुत ही भावुक लड़की है वह, मेरी मुलाकात जब उससे हुई, तब तक उसके बारे में कॉलोनी में होने वाली चर्चा को सुन चुकी थी, यह कि खुद अपने बारे में ज्यादा चर्चा करना, अपनी विशेषताएँ गिनाना उसका शगल है।

समझ नहीं आता, उम्र के चालीस बसंत पार करने के बाद भी लड़कियाँ अपने भविष्य को लेकर ज्योतिष, हस्तरेखा आदि विद्याओं के सहारे मात्र एक डेढ़ वर्ष में भाग्योदय पर विश्वास कर लेती हैं, और फिर शुरू होता है भाग्योदय होने के पहले का प्रचार प्रसार।

कॉलोनी के लोगों ने उसके ऐसे कितने ही एक डेढ़ वर्ष गुजरते देखे हैं, अतः अब सभी की धीरे-धीरे यह धारणा बन गई है कि उसकी शादी न होना, उसपर भी लगातार इन्हीं अंधविश्वासों के भरोसे पड़े रहने से इसका ऊपर का माला खिसक गया है, वर्ना वह चुप रहकर भी इंतजार कर सकती है। किन्तु नहीं, वह इतनी उतावली हो जाती है कि उसे लगने लगता है जैसे उसका भाग्य उसे आसमान पर बैठने वाला है। आप लोगों ने जिसे तिनका समझा है उसी को लोग आँखों पर बैठायेंगे।

सुधा उसकी बातों को बड़े ध्यान से सुनती है और उसकी समझदारी भरी उम्र में बचकानी सी बातों में से कहीं इतने बरसों से खोया अपनत्व के अस्तित्व का वटवृक्ष तलाशती है, जिसकी उसे सख्त जरूरत है। वह चाहती है कि कोई तो हो ऐसा, जो झूठा ही सही उसकी उन्नत होती अभिलाषाओं पर सहमति की मुहर लगा दे।

वह इसलिए समय से पहले ही अपनी भविष्यवाणियों को उजागर कर देती है। उसके मन में डर इतना गहरा समा गया है कि लगता है, मानों बहुत से लोगों की सहमति से भाग्योदय के डर को कम कर रही है, या शायद कम कर पाने की कोशिश भर कर रही है।

उसकी मछली सी आँखें अपने भविष्य की योजना बनाते हुए चमक उठती हैं और थोड़ी सी सुधा की सराहना पाकर विद्या के चेहरे पर क्रांति की ऐसी लहरें आती कि मन करता इसे हर दम ऐसे ही देखने के लिए झूठे आश्वासन दिया करे। किन्तु सुधा यह भी जानती हैं कि सच्ची दोस्त ऐसी होती ही नहीं है। उसे तो अपनी सखी की अच्छी मार्गदर्शिका भी होनी चाहिए। तो भला क्या सुधा उसकी बेहतर सखी है? वह सुधा को अपनी अच्छी सखी मानती है और शायद जो नहीं बताना चाहिए वह भी बताती चली जाती है, तो क्या सुधा उस के विश्वास पर खरी उतर पा रही है??

यही सब बातें जब सुधा को मथने लगीं तो एक दिन उसने उसकी बातों को तर्कपूर्ण ढंग से गलत बता दिया। फिर क्या था एक झटके में विद्या के दूसरे रूप से परिचय हो गया।

''सुधा मुझे तुम से ऐसे विचारों की उम्मीद नहीं थी।"... विद्या क्रोधित होकर कह गई।

''शांत मन से मेरी स्पष्ट बातों पर सोचना, शायद तुम्हें लगे कि मेरी बातें ठीक हैं।".. सुधा ने अंत में उसे एक ही बात कही, उस दिन विद्या तनावग्रस्त ही वापस घर लौट गई।

यह तो निश्चित था कि आज की बहस के बाद वह कुछ दिन तक सुधा के घर नहीं आयेंगी, सुधा उसकी इस आदत से बखूबी परिचित है। जब थोड़ा शांत होगी या कुछ जीवन में कुछ नया घटेगा, तो फिर से बताने की उत्सुकता में सुधा के पास पहुँच जायेगी।

बहुत से दिन बीत गये, सुधा ने भी विद्या की सुध नहीं ली। इन दिनों सुधा की व्यस्तता भी कुछ ज्यादा बढ़ गई है, ध्यान भी नहीं रहा।

एक दिन विद्या शाम को हाजिर हो गई, चेहरा उतरा है, थोड़ी देर मौन बैठी रही।

''चेहरे की कांति का क्या हुआ, आजकल कहाँ ध्यान रहता है?"...सुधा ने कुरेदा।

''अब तुझसे क्या छिपाना, वह जो मेरा दिल लग गया था न टेलीफोन वाले दोस्त से, उससे संबंध तोड़ लिया।".. बहुत ही उदास स्वर में बोली।

''क्यों, क्या बात हो गई।"...सुधा के लिए यह कोई नया विषय नहीं है।

''मैंने उसे अपने पैरों में लगे महावर, बिछिया पहने फोटो भेज दी थी और लिख दिया था कि यह तुम्हारे लिए पहनी है।"...

''तो क्या जवाब आया।"... सुधा भी सोच रही थी कि ईश्वर करे उसकी यहाँ बात बन जाये इसलिए झट से पूछ लिया।

''होना क्या था वह खत उसकी बीवी के हाथ लग गया, अब खत में मेरा फोन नंबर तो लिखा ही था उसने मुझे खरी-खोटी सुना दी।"...

''तुमने उसे क्या जवाब दिया तुम्हें पहले से पता था कि वह शादीशुदा है।"...

''अरे मैंने भी उसे बता दिया कि मुझसे तो वह बातें इस तरह करता था जैसे शादी नहीं हुई है मुझे क्या पता कि वह शादीशुदा है वरना मैं क्यों बात करती, पहले अपने पति को संभालो।"...

''उसने क्या जवाब दिया।"... सुधा ने उत्सुकता से पूछा।

''पहले तो उसने अपने ही पति को खूब गालियाँ दी, फिर मुझे धमकी दी आज के बाद फोन नहीं करोगी और न ही कोई पत्र व्यवहार करोगी मेरा घर उजाड़ोगी तो बहुत सारी बद्दुआ पाओगी यह बोली है वह मुझसे।"...

''ठीक जवाब दिया तुमने, पहली बात तो, तुझे दोस्ती रखनी थी। उसके दिल में घुसने की कोशिश क्यों की।"... सुधा बोली, कहीं न कहीं सुधा को भी बुरा लग रहा है कि उसकी बीवी ने विद्या को इतनी खरी-खोटी कैसे सुनाई।

''मेरी दोस्ती का मतलब तो दिल लगाना ही है, सामने वाला न समझे तो मैं क्या करूँ, मैंने तो उसे स्पष्ट सब कुछ बता दिया था, उसे भी तो मजा आ रहा था, तुम ही बताओ, मैं ही फोन करती थी। कितना खर्चा किया, मेरी तो इनकम भी कुछ नहीं है। अपने पास बचा के रखे पैसों से फोन वगैरा करती रही सारी जमा पूंजी खर्च हो गई।"... अभी तक अपने दिल बहलाने के माध्यम का हिसाब किताब भी बैठा लिया था और ज्यादा दुख उसकी जो जमा पूंजी थी उसको खर्च करने का हो रहा था। यह दुख होना स्वाभाविक भी था उसका भाई उसे घर खर्च के हर महीने कुछ पैसे दिया करता था वह भी बहुत थोड़ा ही है उसमें से भी बचा लेना यह तो इसकी कला ही है।

उसे संबंध टूटने से ज्यादा पैसों की बर्बादी का दुख हुआ, आज तक विद्या ने कहीं नौकरी नहीं की, क्योंकि हर जगह कम इतनी तनख्वाह दी जाती है कि इतनी कम रकम में उसका गुजारा कैसे होगा? उसका कहना है।

सुधा को उसके विचार एक सामान्य इंसान से हटकर लगते हैं, अपने को महान समझकर अभी तक को नौकरी नहीं की और आगे भी करने का इरादा नहीं है।

घर में भाई भाभी की बर्दाश्त की हद भी पार होने को ही हो गई है, किन्तु सुधा के बार-बार आग्रह पर भी वह नौकरी करने को तैयार नहीं होती और न ही अपने को व्यस्त रखने के साधन तलाश करती है। फुर्सत में होने से मोहल्ले की महिलाएँ भी उसे फालतू कह देती, क्योंकि उनके पास तो घर के

अनेक काम होते हैं।

यह सारी समस्याएँ विद्या की है और उनसे प्रतिपल जूझ रही हैं सुधा। ऐसा लगता है जैसे उसके तन, मन की सारी पीड़ा, उसकी खुद की है और उनसे मुक्ति की राह भी उसी को खोजना होगी। आज नहीं तो कल। एक दोस्त अच्छा मार्गदर्शक हो सकता है, राह दिखा सकता है कि किस ओर चलना है, लेकिन उसके साथ चल तो नहीं सकता। सब दोस्त की इच्छा शक्ति पर निर्भर करता है कि वह चलेगा या नहीं। न तो दोस्त को इस हाल में छोड़ा जा सकता है और न ही उसको इस हालत में देखा जा सकता है। सुधा की छटपटाहट विद्या की मन स्थिति से कम नहीं है, लेकिन छोड़ा भी नहीं जाता। यह दोस्ती कम जिम्मेदारी ज्यादा लगने लगी है और इसे स्वाभाविक तौर से ही सुधा की जिंदगी में शामिल हो गई है अब जब विद्या कभी आती नहीं है और कुछ ज्यादा समय गुजर जाता है तो सुधा को खुद उसकी याद आने लगती है और वह वैसे भी ऐसे-ऐसे मसले लेकर आती है जो सुधा ने अपनी जिंदगी में कभी न तो सुने हैं न देखे हैं, ऐसे में एक दोस्त प्रयास ही कर सकता हैं अपने दोस्त के जीवन को स्थापित करने के लिए और वह लगातार उसके संपर्क में रहकर उसे ऊर्जावान बनाए रखता है। कभी तो जीवन में कोई किनारा मिलेगा इसी उम्मीद के साथ वह अपने दोस्त का साथ देता है।

अभी कुछ दिनों से विद्या का इधर आना नहीं हुआ है। ऐसा तो अक्सर होता ही रहता है इसीलिए सुधा ने भी ज्यादा ध्यान नहीं दिया। लेकिन आज की सुबह बड़ी सुहानी है सूरज तामझाम के साथ परदों पर अपनी रोशनी बिखेर रहा है सुधा ने उठकर पर्दे सरकाए तो धूप का एक टुकड़ा कमरे में चला आया तभी फोन की घंटी बज उठी।

''हेलो सुधा! मैं मुंबई से बोल रही हूँ और सुनो। एक खुशखबरी है। मैं जतिन के साथ हूँ, भैया भाभी की सहमति से दो दिन में ही यह सब निर्णय हुए और मैं जतिन के साथ यहाँ आ चुकी हूँ। बहुत ही सुंदर और अच्छे विचारों के इंसान हैं। इनकी भी अभी तक शादी नहीं हुई और यह एक सरकारी ऑफिस में काम करते हैं। इस बार भैया-भाभी ने मेरी एक नहीं सुनी और मुझे इनके साथ विदा कर दिया। सच सुधा, मैं बहुत खुश हूँ। बहुत अच्छे स्वभाव के हैं जतिन। अभी तक तो यही लग रहा है। इनका अपना घर है और परिवार में कोई नहीं है। मुझे भी एक सहारा मिल गया है, देर से ही सही ईश्वर ने मेरी सुन ही ली।"...उसके स्वर में खुशी साफ झलक रही थी।

''तुम्हारे मुँह में घी शक्कर। ऐ सखी..., तुमने इतनी बड़ी खुशी की खबर सुनाई है कि इस खबर के लिए तो मैं भी सालों से तरस रही हूँ मेरी बहुत सारी शुभकामनाएँ। तुम अपने सुखी संसार में रहो और यह कसम खाओ कि वहाँ से कहीं भी निकल कर नहीं जाओगी। अब वहीं रहोगी, चाहे जैसे भी रहना पड़े और यह तुम्हारी जिम्मेदारी है कि जतिन के घर को खुशहाल घर बना सको।"...सुधा का हिदायतें देते-देते गला भर आया। आज लगा एक बेटी का, बहन का और मेरी सखी का घर बस गया, ईश्वर के घर देर है अन्धेर नहीं।

000

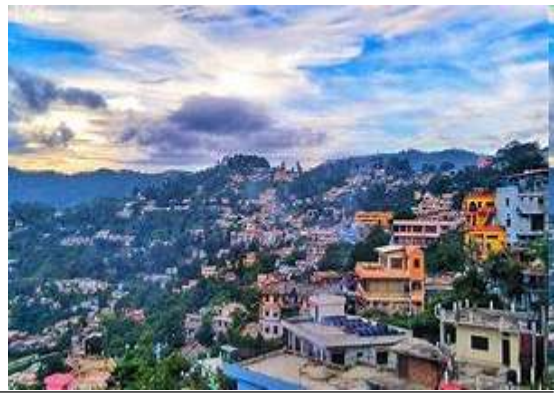

लंगोटी वाला वैद्य

- डॉ. आर. वासुदेव प्रशांत

प्राचीन काल में त्रिगर्त-देश में एक महाप्रतापी राजा राज करता था। उसका नाम सुशर्मचन्द्र था और उसी के नाम पर उसकी राजधानी का नाम भी सुशर्मपुर पड़ गया था। (इसे आजकल पुराना कांगड़ा कहा जाता है।) एक बार त्रिगर्त-नरेश की रानी बीमार पड़ गई और उस के पेट में भयानक दर्द होने लगा। उधर वह माँ बनने वाली भी थी। इसलिए उसकी बीमारी पर सारा राज परिवार चिन्तित हो उठा। राजा ने बड़े-बड़े वैद्यों को बुलवा कर रानी का इलाज करवाया, किन्तु उसके पेट दर्द में कोई फर्क नहीं पड़ा। किसी भी वैद्य की दवा-दारू का असर न पड़ता देख राजा बहुत चिन्तित रहने लगा। दर्द का कारण किसी की भी समझ में नहीं आ रहा था और दर्द के कारण रानी की छटपटाहट राजा से नहीं देखी जा रही थी।

अकस्मात् उन्हीं दिनों सुशर्मपुर में एक उत्सव चल रहा था। दूर-दराज़ से लोग उस में भाग लेने के लिए आ रहे थे। नगर के बाहर एक चौकी बनी हुई थी जहाँ बाहर से आने वाले लोगों का नाम पता आदि दर्ज होने पर ही उन्हें नगर में प्रवेश करने की अनुमति मिलती थी।

एक दिन इन यात्रियों में एक ऐसा व्यक्ति भी आया जो एक दूरवर्ती देश में सरयु नदी के किनारे रहता था। वह दूर-दूर के देशों तथा प्रदेशों के भ्रमण पर निकला हुआ था। इस उत्सव की प्रसिद्धि सुन कर वह भी इसे देखने चला आया था। राजपुरुषों द्वारा उस का नाम, पता आदि पूछे जाने पर ज्ञात हुआ कि वह व्यवसाय से एक वैद्य था। सो वे उसे राजा के पास ले गए।

वह यात्री एक साधरण-सी लंगोटी पहने हुए था और उस की देह अर्धनग्न थी। राजा को विश्वास नहीं हो रहा था कि वह भी कोई वैद्य हो सकता है। अतः उसने उस का अता-पता जानकार उसे अपने व्यवसाय में अपनी विषेशज्ञता सिद्ध करने को कहा। इस पर उस वैद्य ने राजा से कहा कि वह एक धागे की सहायता से किसी की भी नाड़ी को पढ़ सकता है।

उस यात्री की बात सुनकर राजा को भी बड़ी उत्सुकता हुई। सो उस ने उसे कहा,

''वैद्यराज, हमारी पत्नी पेट-दर्द से अधमरी हो रही है। अगर तुम उसका इलाज कर दोगे, तो तुम्हें मुँह मांगा इनाम दिया जाएगा।'' राजा द्वारा उसे 'वैद्यराज' कहे जाने पर यात्री को लगा कि शायद उसकी वेशभूषा देखकर ही उस पर व्यंग्य कसा जा रहा है। उसे मन में बुरा भी लगा, किन्तु फिर भी उसने विनम्रता से कहा, ''मैं अपनी पूरी कोशिश करूँगा, महाराज।''

''कोशिश नहीं, अगर तुम इलाज न कर सके तो तुम्हें मृत्यु-दंड भी मिल सकता है। यह भी सोच लो। राजा ने उससे कड़क आवाज़ में कहा। वैद्य को अपने हुनर पर पूरा भरोसा था, किन्तु फिर भी वह राजा की घोषणा पर भयभीत हो उठा। वह सोचने लगा, किस संकट में आ फंसा। कहाँ तो देश-भ्रमण के लिए निकला था और कहाँ मौत के सामने आ खड़ा हुआ। फिर भी उसने अपना धैर्य बनाये रखा और राजा की चेतावनी को स्वीकार कर लिया।

राजा ने पहले तो उसकी परीक्षा लेने की सोची। सो उसके आदेश पर सेवकों ने वैद्य के हाथ में एक धागा पकड़ा कर उसे रानी के कक्ष के आगे बरामदे में बिठा दिया। उसे बताया गया कि धागा रानी के हाथ की नाड़ी से बंधा है। वह वैद्य धागे को हाथ में लेकर काफी देर तक सोच-विचार करता रहा। सब उसकी ओर बड़ी उत्सुकता से देख रहे थे।

थोड़ी देर के बाद वैद्य अपने-आप से बातें करने लगा, 'धागा जो कहता है, उसे तो मैं मान नहीं सकता।' इसी तरह वह काफी देर तक धागे को

हाथ में पकड़े बड़बड़ाता रहा। यह देख राजा का धैर्य समाप्त होने लगा। उस ने कड़क आवाज में पूछा, ''क्या बात है वैद्य? इतनी देर से तुम पागलों की तरह बड़बड़ाये जा रहे हो।''

''महाराज, धागा जो कहता है उसे मैं मान ही नहीं सकता।' वैद्य ने हाथ जोड़कर बड़ी विनम्रता से राजा से कहा।

''क्या कहता है धागा? बोलोगे भी कुछ?'' राजा ने क्रोधित होकर पूछा।

''महाराज, अपराध के लिए क्षमा करें। धागा तो यही कहता है कि रोगी ने चूहे खाए हैं।'' वैद्य ने बड़े दीन भाव से कहा।

यह सुन कर राजा प्रसन्न हो उठा। राजमहल के अन्य परिजन तथा सेवक भी एक-दूसरे की ओर आश्चर्य से देखने लगे। धागा वस्तुत: उस वैद्य की परीक्षा लेने के लिए बिल्ली की टांग से बंधा हुआ था। यह देख वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने उस वैद्य की सूझ-बूझ और हुनर की भूरि-भूरि प्रशंसा की। राजा को पूरा विश्वास हो गया कि वह रानी का इलाज करने में सक्षम है। अत: उसे राजभवन के अन्दर जाने की अनुमति मिल गई। उसने रानी की नब्ज़ देखते ही समझ लिया कि पेट-दर्द का क्या कारण है।

इस प्रकार रानी का इलाज शुरू हो गया। वैद्य ने खद्दर का एक कपड़ा, पानी की बाल्टी और तांबे का सिक्का मंगवा लिया। फिर उसने सेवकों को सिक्के को आग में तपाकर लाल करने को कहा। इसके बाद उसने खद्दर के कपड़े को पानी में भिगो कर निचोड़ा और रानी के पेट पर रख दिया। आग में तप कर लाल हुए सिक्के को उसने पानी से ज़रा गीला करके रानी के पेट पर पड़े गीले कपड़े पर रख दिया। अब धीरे-धीरे उस की भाप से रानी के पेट की नस ढीली होने लगी। थोड़ी देर में ही रानी को गहरी नींद आ गई। कितने ही दिनों के बाद तो वह ऐसी नींद सोई थी। वैद्य ने राजा से प्रार्थना की कि कोई भी रानी की नींद भंग न करे।

काफी देर के बाद जब रानी की आँख खुली तो राजा ने पूछा, ''महारानी, कैसा है अब आप का पेट-दर्द?''

''बिल्कुल ठीक है, महाराज।'' रानी ने मुस्कुरा कर कहा। उस का चेहरा अब खिला-खिला सा लग रहा था। यह सुनकर राजा की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। समूचा राजभवन वैद्य के हुनर का गुणगान करते नहीं थक रहा था?

राजा ने अब वैद्य से पेट-दर्द का कारण पूछा, तो उसने हाथ जोड़ कर कहा, ''महाराज, रानी जी के पेट की एक नस बच्चे के हाथ में आ गई थी। उस के खिंच जाने के कारण रानी जी को असह्य पीड़ा होने लगी थी। अगर वह नस ढीली न होती, तो प्रसव के समय रानी जी का जीवन खतरे में पड़ सकता था।''

यह सुन कर राजा वैद्य के प्रति अत्यन्त कृतज्ञ हो उठा। उसने तुरन्त अपनी राजसभा बुलाई और वैद्य की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा, ''वैद्यराज, माँगो, जो भी माँगना चाहते हो।''

वैद्य ने विनम्रता पूर्वक हाथ जोड़े और राजा से कहा, ''महाराज, रानी जी का जीवन सुरक्षित हो गया है। बस, यही मेरा पुरस्कार है।'' इस बार राजा के द्वारा वैद्यराज कहे जाने पर मन-ही-मन आनन्दित हो रहा था, क्योंकि अब यह संबोधन व्यंग्य के तौर पर नहीं बल्कि उसके प्रति सम्मान के तौर पर कहा गया था।

वैद्य के इस निस्वार्थ-भाव को देख कर राजा और भी अधिक प्रसन्न हो उठा। उसने भरे दरबार में वैद्य का सम्मान किया और नगर के बाहर बहुत-सी भूमि दान देकर उसे पुरस्कृत किया।

-जवाहर नगर, धर्मशाला-176213
(हि.प्र.) फोन: 94599 87125

पारस

-आशा शैली

''राज! ओए राज! ऐ वीर जी के कमरे की बत्ती किसने जलाई ए?'' सोमनाथ ने आँगन में रखी बाल्टी से लोटे में पानी लेकर हाथ-मुँह धोते हुए कमरे में रोशनी देखकर पूछा तो राजवन्ती ने बड़ी बुझी हुई आवाज़ में जवाब दिया,

''ओ, दुपैरी सारे आ गए थे।''

''अच्छा! चलो अच्छा हुआ, बच्चों को छुट्टियाँ हो गई होंगी न। पारस तो सो गया होगा? मैं उनसे मिलकर आता हूँ।''

''रोटी तो खा लो।''

''रोटी-शोटी सब बाद में, पहले मैं अपणे वीरजी को तो मिल लूँ।'' राजवन्ती के रोकते-रोकते भी सोमनाथ भाई के कमरे में चला गया। काका चाचा को देखकर बच्चे खुशी से नाचने लगे तो कैलाश ने उन्हें डांट दिया, चुप करो। रौला न पाओ।'' भाभी के पास पलंग पर कुछ गठरी-सा ढका हुआ देखकर सोमनाथ ने पूछा, ''यह क्या है भरजाई जी?''

''यही तो मैं कह रही हूँ, शैतान सुनते ही नहीं, पारस सोया हुआ है।''

''ये बन्दर आते ही आपके साथ चिपक गया?''

''नहीं, मैं ही उठा लाई इसे।''

''तू ने कुछ खाया या नहीं? सुबह-सवेरे का निकला हुआ अब आया है, पहले कुछ खा-पी ले फिर रज्ज के मिल लेना। हम जा नहीं रहे।'' त्रिखा जी गुसलखाने से बाहर निकल आए। उन्होंने तौलिए से हाथ पौंछते हुए पाँव छूते भाई के सिर पर हाथ रखा और उसे उठाकर गले लगा लिया।

''ठीक है।'' कहकर सोमनाथ भाई के पाँव छूकर और खैर-खरीयत पूछकर अपने कमरे में चला गया। किसी ने कुछ बताया तो नहीं फिर भी कैलाश मामले की तह तक पहुँच ही चुकी थी। वह जान गई थी कि जिस पारस की देख-भाल के लिए उन्होंने गरीब घर की लड़की को सोमनाथ के लिए चुना था, वह बच्चे की कितनी दुर्दशा कर रही है। माँ तो माँ होती है और पारस अब बिन माँ का बच्चा है। सयाणे सच ही कहते हैं, 'रब्बा माँ न मरे किसी की'। पर परमात्मा के आगे किस की चली है? सोमे को भी जनानी मिल गई पर बेचारा पारस, बिन माँ का बच्चा! सचमुच रुल गया। कैलाश त्रिखा की आँखें जानकी को याद करके भीग गईं।

रात को सोते समय कैलाश ने त्रिखा जी से अपना दर्द साझा किया, ''आपको कुछ समझ में आया?''

''हाँ कलाश! जो हमने सोचा था उससे उल्टा ही हुआ। बच्चा तो रुल ही गया, पर अब कुछ कहेंगे तो कलेस खड़ा हो जाएगा। लगता है सोमे को कुछ पता नहीं लगने देती। बड़ी होशियार जनानी है।''

''सच कह रहे हैं आप, पर इसका इलाज कुछ तो सोचना ही पड़ेगा न। इस तरह बच्चे को रब आसरे छोड़ा तो नहीं जा सकता।''

''ठीक कह रही हो, अभी तो दो महीने की छुट्टियों में तुम लोग हो ही। तब तक सोचने के लिए बड़ा वक्त है। परसे को अपनी नजरों के सामने रखना।''

''आपको कहने की जरूरत महसूस होती है क्या?'' उसने मुँह बनाया तो त्रिखा जी ने हँसते हुए पत्नी की नाराजगी दूर की,

''ओए नहीं, भागां वालेयो, नराज नहीं होइदा। तुम से ज्यादा कौन देखभाल कर सकता है बच्चे की।''

''चलो सो जाओ। ऐंवेंई थके होए हो।'' कहकर

कैलाश ने पैरों के पास पड़ी चादर उपर को खींच ली।

दो दिन रहकर त्रिखा जी बच्चों को गाँव में छोड़कर वापस अपनी नौकरी पर रावलपिण्डी चले गए। सोमनाथ को वैसे भी कौन-सा घर बैठना होता। बच्चे शहर की घुटन से गाँव में आकर खुले में बहुत खुश रहते और अक्सर ही खेत-बाग़ में भी आ धमकते थे। सोमनाथ को भी बच्चों का आना अच्छा लगता पर अन्दर ही अन्दर उसे यह डर भी रहता कि कहीं बच्चे खेतों के किनारे होकर बहने वाली हर्रो की तरफ न जा निकलें। इस बरसाती नदी, हर्रो का कोई भरोसा नहीं कब उफन पड़े। गर्मियाँ पूरे जोरों पर थीं और यह बरसाती नदी, जो अभी सिकुड़ी पड़ी थी पहाड़ों पर होने वाली बरसात से किसी भी समय भर सकती है। अगर बच्चे उधर हुए तो कहीं नदी की चपेट में न आ जाएँ, इसलिए जब तक बच्चे खेत में रहते उसे बहुत चौकन्ना रहना पड़ता था और नौकरों को भी।

सोमनाथ का सोचना गाँव की स्थिति के हिसाब से सही था। उनका यह छोटा-सा गाँव, 'अस्मान खट्टड़' हर्रो नदी के किनारे पर ही बसा हुआ था। कोहमरी और हरिपुर से अधिक दूरी न होने के कारण पहाड़ की ठण्डी हवाओं का असर भी यहाँ रहता ही था। इसी हिसाब से पहाड़ी फलों की उपज भी होती थी। पता नहीं कब पहाड़ों पर बारिश हो जाए और हर्रो उफनने लगे। बच्चों का क्या, शैतानी तो करेंगे ही। बड़ी मुश्किल से उन्हें खुला खेलने को मिलता है। शहर में तो सौ पाबन्दियाँ हैं। यह न करो, वह न करो। यहाँ न जाओ, वहाँ न जाओ। गाँव में कोई लम्बी-चौड़ी सड़कें नहीं कि ट्रकों-बसों से बच्चों को बचाना है। ले-देकर त्रिखा जी ने हँसते हुए पत्नी की नाराजगी दूर की,

''ओए नहीं, भागां वालेयो, नराज नहीं होइदा। तुम से ज्यादा कौन देखभाल कर सकता है बच्चे की।''

''चलो सो जाओ। ऐंवेंई थके होए हो।''कहकर

कैलाश ने पैरों के पास पड़ी चादर उपर को खींच ली।

दो दिन रहकर त्रिखा जी बच्चों को गाँव में छोड़कर वापस अपनी नौकरी पर रावलपिण्डी चले गए। सोमनाथ को वैसे भी कौन-सा घर बैठना होता। बच्चे शहर की घुटन से गाँव में आकर खुले में बहुत खुश रहते और अक्सर ही खेत-बाग़ में भी आ धमकते थे। सोमनाथ को भी बच्चों का आना अच्छा लगता पर अन्दर ही अन्दर उसे यह डर भी रहता कि कहीं बच्चे खेतों के किनारे होकर बहने वाली हर्रो की तरफ न जा निकलें। इस बरसाती नदी, हर्रो का कोई भरोसा नहीं कब उफन पड़े। गर्मियाँ पूरे जोरों पर थीं और यह बरसाती नदी, जो अभी सिकुड़ी पड़ी थी पहाड़ों पर होने वाली बरसात से किसी भी समय भर सकती है। अगर बच्चे उधर हुए तो कहीं नदी की चपेट में न आ जाएँ, इसलिए जब तक बच्चे खेत में रहते उसे बहुत चौकन्ना रहना पड़ता था और नौकरों को भी।

सोमनाथ का सोचना गाँव की स्थिति के हिसाब से सही था। उनका यह छोटा-सा गाँव, 'अस्मान खट्टड़' हर्रो नदी के किनारे पर ही बसा हुआ था। कोहमरी और हरिपुर से अधिक दूरी न होने के कारण पहाड़ की ठण्डी हवाओं का असर भी यहाँ रहता ही था। इसी हिसाब से पहाड़ी फलों की उपज भी होती थी। पता नहीं कब पहाड़ों पर बारिश हो जाए और हर्रो उफनने लगे। बच्चों का क्या, शैतानी तो करेंगे ही। बड़ी मुश्किल से उन्हें खुला खेलने को मिलता है। शहर में तो सौ पाबन्दियाँ हैं। यह न करो, वह न करो। यहाँ न जाओ, वहाँ न जाओ। गाँव में कोई लम्बी-चौड़ी सड़कें नहीं कि ट्रकों-बसों से बच्चों को बचाना है। ले-देकर बैलगाड़ियाँ हैं। गाड़ीवान भी गाँव के अपने। बच्चों को बचाकर ही चलते हैं, फिर भी यह खसमाखाणी हर्रो.....। बच्चे बाग में आते हुए पारस को भी साथ ही उठा लाते, उन्हें बाग में जाता देख पारस रोने लगता और उनके पीछे लग जाता।

बच्चे तो बच्चे ही थे दिनभर खेतों में दौड़ते और

मोटी-पीली, सफेद खुमानियों की टोकरियाँ भरकर घर ले जाते। कभी-कभी दोनों देवरानी-जेठानी भी बाग़ में आ जातीं दोपहर की रोटी लेकर और बाग में ही पिकनिक हो जाती।

सोमनाथ अक्सर ही सोचता, 'पारस भी कितना हिल-मिल गया है सबके साथ। जब वे लोग रावलपिण्डी चले जाएँगे तो पारस उदास तो होगा ही, पर भापा जी (भाई साहब) और भरजाई तो कह रहे थे कि पारस को वे अपने साथ ले जायेंगे। चलो अच्छा है, शहर में पढ़ाई-लिखाई भी तो अच्छी हो जाएगी। इसके साथ ही सोमनाथ सोचने लग जाता कि पारस अभी तीन साल का भी नहीं हुआ है और स्कूल में तो पाँच साल से पहले दाखला भी नहीं होगा। चाहे खेती करे पर पढ़ाई तो बहुत जरूरी होती है न? पारस को पढ़ाना तो जरूर है।' सोमनाथ पारस को लेकर सपने बुनता ही रहता था। इन्हीं सपनों और बच्चों के हुड़दंग के बीच छुट्टियाँ कब समाप्त हो गईं सोमनाथ को पता ही नहीं चला।

सोमनाथ के सपनो को बेशक पंख लगे हुए थे, लेकिन विधि का विधान कुछ और ही था। एक दिन त्रिखा जी बच्चों को लेने आ गए। स्कूल खुलने वाले थे। उन्होंने आते ही बताया कि उनका तबादला अम्बाला सचिवालय में हो गया है। वे अम्बाला में बच्चों का दाखला कराकर बाद में पारस को ले जाएँगे, अभी तो उन्हें अचानक ही जाना पड़ रहा है। बच्चों की पढ़ाई खराब न हो इसलिए बहुत जल्दी ही बच्चों को लेकर त्रिखा जी अम्बाला चले गए और पारस फिर एक बार विमाता राजवन्ती के पास रह गया। वह पाँच साल का नहीं हुआ था, अभी उसको स्कूल भेजने में समय था इसलिए चिन्ता की कोई बात नहीं थी। न तो कैलाश ने और ना ही त्रिखा जी ने राजवन्ती से पारस के व्यवहार के बारे में सोमनाथ से कुछ कहा था। उसे सोमनाथ को कुछ पता ही नहीं चल पाया और सब कुछ पहले की तरह चलने लगा।

अम्बाला रावलपिण्डी से बहुत दूर था। पर त्रिखा जी का ख़त सोमनाथ के नाम बराबर ही आता रहता और सोमनाथ भी उसी तत्परता से उन्हें जवाब दे देता। त्रिखा जी दूसरी सब बातों के बाद भी पारस का हाल पूछना नहीं भूलते और उसका ध्यान रखने को भी कहते। यानि उन्हें पारस की चिन्ता वहाँ भी थी पर सोमनाथ को तो वह सब पता नहीं था जो वे लोग जानते थे। उसके तो वही जानवर, गाय-बैल, भैंसें और खेत-नौकर। सुबह अंधेरे में निकल जाना और रात होते घर वापस लौटना।

.....

समय अपनी गति से गुजरता जा रहा था। सोमनाथ के दूसरे विवाह को दो साल हो रहे थे और पारस अब चार साल का होने जा रहा था। अब तक भी वह कुछ समझने नहीं लगा था। वह नहीं जानता था कि उसकी माँ सौतेली है, फिर भी वह बहुत रोंदड़ और जिद्दी हो गया था और राजवंती से तो बहुत ही डरता था। अब तक थोड़ा-थोड़ा सोमनाथ परिस्थितियों और राजवन्ती के रवैये को समझ रहा था। पहले तो उसने राजवन्ती को प्यार से समझाने की कोशिश की, फिर भी कुछ कहने से कोई लाभ न देखकर उसने पारस का नाम पाँच साल का होने से पहले ही गाँव के स्कूल में लिखवा दिया था और पारस स्कूल जाने लगा था। स्कूल से लौटकर पारस अपने नौकर करमे के घर चला जाता और उसके बच्चों के साथ खेलता रहता। सोमनाथ ने ही राजवन्ती का रवैया देखकर करमे की बीवी लच्छो को पारस की देखभाल करने को कहा था।

राजवंती इसलिए खुश थी कि उसका अपना बच्चा जल्दी ही उसकी गोद में होगा और पारस इसलिए खुश था कि उसे घर रहकर राजवंती की मार नहीं खानी पड़ती। सोमनाथ इसलिए संतुष्ट था कि उस के पारस की बेकद्री नहीं होगी। सब अपनी-अपनी

जगह ठीक थे। जिन्दगी पटरी पर थी।

.....

मेरे मन कुछ और है, दाता के कुछ और। रावलपिण्डी हालांकि अच्छा बड़ा शहर था पर लोग अभी इतने जागरूक भी नहीं थे कि प्रसव या अन्य चीजों के लिए अस्पताल और डॉक्टरों का सहारा लेते। फिर अस्मान खट्टड़ तो निपट गाँव ही था। यहाँ तो गाँव की बड़ी-बूढ़ी स्त्रियाँ और अनुभवी दाइयाँ ही सब कुछ थीं। पर हाँ! दाइयाँ अवश्य दक्ष होती थीं, सो गाँव की दाई ने पहले ही सोमनाथ और राजवंती को चेता दिया था कि इस तरह दिन भर सोये रहने और मेहनत न करने से प्रसव के समय मुश्किल हो सकती है। पर राजवंती उसकी हर बात को सुना अनसुना कर देती। राजवंती जो बहुत ही गरीब घर से आई थी, ऐश आराम को ही सब कुछ समझने लगी थी। उसे दायी माँ की सलाह बहुत बुरी लगती। बस खाया-पिया, बनाव श्रृंगार किया और पीढ़ा बिछाकर बैठ गई गप्पें लगाने। गाँव की निठल्ली स्त्रियाँ सहेलियाँ भी बन गई थीं उसकी। समय आराम से कटने लगा था। कभी-कभी दायी माँ चक्कर लगा जाया करती और उसे चेतावनी भी दे जाती, ''बहू! बच्चे का वज़न बढ़ रहा है न हो तो थोड़ा घूम-फिर आया करो। काम करती रहोगी तो परेशानी नहीं होगी। मैं चेता रही हूँ। कुछ हुआ तो मुझे दोष मत देना।'' पर राजवंती क्यों सुनने लगी।

सोमनाथ को सबसे बड़ा घाटा तो त्रिखा जी के अम्बाला जाने से हुआ था। जब तक वे रावलपिण्डी में थे तब तक सब कुछ ठीक था। अब वह क्या करे, उसे समझ में नहीं आ रहा था? घर में कोई बड़ा भी नहीं था जो उसकी मदद करता। बस गाँव-नाते की बुजुर्ग महिलायें थी जिनकी कोई बात राजविन्दर के कान में पड़ती ही नहीं थी।

सबकुछ ठीक-ठाक चल रहा था। प्रसव का समय भी आ गया। दायी माँ की शंका सत्य सिद्ध हुई। कन्या को जन्म देते समय राजवन्ती और कन्या दोनों ही चल बसीं। त्रिखा जी सपत्नीक अम्बाला से आए तो अवश्य पर भाई के भाग्य को कोसते हुए जल्दी ही वापस भी लौट गए। हाँ! पारस अब पाँच साल का हो चुका था और स्कूल भी जाता था। इधर अब तक सत्या के कोई बच्चा ही नहीं हुआ था सो उसका प्यार पारस पर उमड़ पड़ा।

रावंती की तेरहवीं हो चुकी थी। मेहमान विदा होने लगे थे। त्रिखा जी भी जाने की तैयारी करने लगे थे, ''कलाश! समान कठा कर लै। कल सवेरे जाणा वी है।'' उन्होंने पत्नी से कहा।

''हाँ जी। पता है, पर मैं काका जी का सोच रही हूँ। माड़ी किस्मत है तो माड़ी ही रहेगी। दाई कह रही थी कि उसने बड़ा समझाया था राजविन्दर को कि थोड़ा-बहुत इधर-उधर फिर-टुर आया करे पर उसने तो सोने पर जोर दिया और बैठने पर।''

''भागां वालिए! होणी के आगे किसकी चली है। पर अब ये क्या करेगा? पहले भी बड़ी मुश्किल से मनाया था। इस बार तो किसी ने रिश्ते के लिए बी नहीं कहा। गाँव के लोग हैं न। हम भी कल चले जाएँगे, शायद सत्या भी कल-परसों चली जाए।'' त्रिखा जी के माथे पर चिंता की रेखाएँ बहुत गहरी हो गई थीं, ''तुम्हारी सत्या से कोई बात हुई क्या इस बारे में? उसे ही कहना अब आती-जाती रहे और इसका घर बसाने के बारे में कुछ सोचे।''

''लो, सत्या इधर ही आ रही है।'' कैलाश ने सत्या को आते देख लिया था, लम्बी उमर है सत्या तुम्हारी, अभी तुम्हारे भाई तुम्हें याद कर रहे थे।''

''दस्सो वीर जी! कुछ काम था?''

''आ सत्या बैठ।'' अब वे उसे सत्तो नहीं कहते थे। त्रिखा जी ने पलंग पर एक तरफ सरक कर उसे अपने पास बिठा लिया। क्रमशः

अगस्त्यमुनि क्षेत्र का इतिहास, पुरातत्व के साथ अवलोकन?

डॉ. हेमन्त चौकियाल

उत्तराखण्ड की यात्रा में रुद्रप्रयाग से केदारनाथ जाने वाले मोटर मार्ग पर 16कि.मी. दूरी तय करने पर अगस्त्यमुनि नाम का एक स्थान आता है। इस नगर का नाम ऋग्वेद के प्रथम मण्डल 165वें सूक्त से 191सूक्त के मन्त्रद्रष्टा ऋषि अगस्त्य के नाम पर है। यह नगर समुद्र तल से 810 मी. की ऊँचाई पर स्थित है।

हमारे पौराणिक धर्म ग्रंथों के अनुसार हिमालय में

फैले समुद्र को अगस्त्य ऋषि ने पी लिया था, उसका प्रायश्चित करने के लिए उन्होंने यहाँ तप किया। केदारखण्ड में वर्णन है कि-

मन्दिन्यास्तटे रम्ये नानामुनिजनाश्रये।
अगस्त्यादिन्महाभागन्नात्वां विप्रोनलाश्रमे।।

ऋषि अगस्त्य ने यहाँ की नागपुर पट्टी में धातुओं को भूगर्भ से खुदवाया इससे उनका उपनाम खनमान, खनित्र भी हुआ। जहाँ भूमि खोदी गई उस पट्टी का नाम ही खदेड़ पड़ गया।

ऋषि अगस्त्य का समय-

मत्स्य पुराण में भगवान महर्षि अगस्त्य की उत्पत्ति के बारे में बताते हुए मत्स्य भगवान ने कहा है कि - इस बदरीवन में मित्र और वरुण नाम के दो तपस्वी ऋषि घोर तपस्या में निरत थे। एक बार महर्षि नारायण स्वर्ग की अप्सरा उर्वशी को लेकर स्वर्ग में इन्द्र के पास जाने लगे तो बदरी आश्रम के समीप ही मार्ग में मित्र, वरुण ने फूल चुनती उर्वशी को देखा। मित्र और वरुण अदिति के 12पुत्रों में से हैं। उर्वशी को देखकर वे कामासक्त होकर स्खलित हो गये, इस बात से उर्वशी भयभीत हो गई कि कहीं ऋषि उसे शाप न दे दें। तब उर्वशी ने उन दोनों के वीर्य को एक घड़े में ले लिया, इस घड़े से दो ऋषि कुमार पैदा हुए जिनमें एक वशिष्ठ और दूसरे का नाम अगस्त हुआ।

जन्मद्वयमतीतं च तत्रापि त्वं स्मरिश्यसि।
एतस्मिन्नेव काले तु मित्रश्चववरुणस्तथा। 23।
बदर्याश्रममासाद्य तपस्ये तुरव्यम्।
तपस्यतोस्तयोरेवं कदाचिन्माधवे ऋतौ।24।
(मत्स्य पुराण -201/23-24)
स्कन्नं रेतस्तवो दृष्टवा शापभीतावराप्सरा।
चकार कलशे शुक्रं तोय पूर्णे मनोरमे।28

तस्मादृषिवरौ जातौ तेजसाअप्रतिमो भुवि।
'वशिष्ठश्चाप्यगत्स्यश्च मित्रावरुणयोः सुतौ।'29

सुतीक्ष्णोऽपि तथेत्याह श्री गमिस्यसि राघव
अहमष्यागमिष्यामि चिराद् ष्टो महामुनि (अध्यात्म रामायण अरण्य काण्ड द्वितीय सर्ग)

राजा दशरथ द्वारा राम लक्ष्मण व सीता वन गमन के समय मुनि सुतीक्ष्ण के साथ कुम्भज आश्रम अगस्त्यमुनि आये। लेकिन यह वर्णन दक्षिण का है। महृष अगस्त्य का उत्तराखंड क्षेत्र में आगमन तब होता है जब श्रीराम द्वारा लंका के राक्षस राज रावण का बध कर दिया जाता है और बचे - खुचे राक्षसों द्वारा राम के हाथों मारे जाने से बचने के लिए यत्र तत्र भागकर बिखराव हो जाता है।

महर्षि अगस्त्य उत्तराखण्ड कैसे और क्यों पहुँचे?

विदर्भ राज्य मैत्रेया वरुणी श्रुतर्वा की कन्या लोपामुद्रा से विवाहोपरान्त पुत्र कामना के निमित्त एक यज्ञ का विचार किया। यज्ञ से पहले महर्षि अगस्त्य ने निश्चय किया कि यज्ञ के लिए वे गृहस्थी के लिए प्रिय पत्नी की इच्छानुसार साज सज्जा युक्त गृह, वाटिका, तड़ाग आदि बनायेंगे जिसके निर्माण के लिए वे दान में पशु धन ही लेंगे। विदर्भ नरेश की आय के अनुपात में ही व्यय को देखते हुए उन्होंने निश्चय किया कि यदि वे विदर्भ नरेश से धन लेंगे तो यह प्रजा पर अतिरिक्त भार होगा। अतः उन्होंने दान लेना अस्वीकार किया। दक्षिण की तरफ बढ़े तो यहाँ लंका पति रावण का अखण्ड राज्य था। उसके द्वारा नियुक्त सेनापतियों द्वारा भी यहाँ प्रजा को सताया गया था। अब तक दशरथ पुत्र राम द्वारा लंका पति रावण का विनाश किया जा चुका था। अतः महर्षि ने इस क्षेत्र को पुण्यमय और सुसंस्कृत बनाया, अब महर्षि द्वारा एक पंथ दो काज किये जा रहे थे। इस क्षेत्र में कोल-भील द्रविड़ आदि जनों को संस्कारित बनाकर मुनि अगस्त्य कन्या कुमारी तक जा पहुँचे।

यहाँ समुद्र जल से अपने पितृ वरुण देव की अभ्यर्थना कर मुनि ने पूर्व दिशा को प्रस्थान किया। मलैया, सुमात्रा, प्राग्ज्योतिष (वर्तमान वियतनाम) तक वैदिक सनातन संस्कृति की ज्ञान पताका फहराते चले महर्षि। वहाँ पर प्राग्ज्योतिष नरेश बोले कि वर्तमान समय में एक मात्र विप्रचित दानव का सिंहिका पुत्र इल्वल (आतापि) ही महाधनपति है। वह महाप्रतापी तथा मायावी दानव अपने भाई वातापी सहित उत्तरापथ (उत्तराखण्ड) में रहता है। महर्षि अगस्त्य ने इस विचार को उत्तम समझ कर पूर्वोत्तर के हिम प्रदेश में प्रवेश किया। महर्षि अगस्त्य ईशानेश्वर- वैश्रवण कुबेर द्वारा पूजित शिव क्षेत्र पंचसिल्हक (वर्तमान में अगस्त्यमुनि के नजदीक सिल्ला गाँव) पहुचे। जहाँ सिंहका नामक राक्षसी के पुत्र इल्वल (आतापी) वातापी ने अपनी दिव्य भव्य राजधानी स्थापित कर रखी थी। यह दानव भगवान शंकर की तपस्या से क मायावी शक्तियों से परिपूर्ण था। यहाँ पहुँचकर आतापी-वातापी ने महर्षि अगस्त्य की चर्चा सुनकर उन्हें ब्रह्म भोज करवाने के दौरान मारने की योजना बनाई, लेकिन महर्षि ने असुरों की मंशा को समझ कर भगवती महाविद्या का मानसिक ध्यान किया। महर्षि के तपोबल से नाना दिव्यास्त्रों से परिपुष्ट देवियाँ प्रकट हुईं। कूर्मासन, चन्द्रासिनी, इन्द्रासिनी, नगरासिनी, सन्यासिनी, पीठासिनी, पद्मावती तथा कन्यासिनी। यहाँ यक्षपति ईशानेश्वर, वैश्रवण एवं कुबेर के साथ-साथ क्षेत्र पाल, मसाण भैरव, वीर बेताल व स्वयं के शरीर के मर्दन से पैदा कोष्माण्डा की मदद से आतापी को उन्हीं के जाल में फंसा कर उनका अंत कर दिया। वातापी पहले ही भोजन के माध्यम से सभी ऋषि-मुनियों के शरीर में पहुँच कर पाचन की वायु से समाप्त हो चुका था तथा

वायु रूप में गुदा से निकल कर विलीन हो चुका था। वातापी की यही विशेषता थी कि वह भोजन के साथ किसी के भी पेट में पहुँचकर पेट फाड़कर स्वयं बच जाता था और उन्हें मार डालता था लेकिन आज महर्षि ने उस मायावी को उसी के जाल में फंसा कर समाप्त कर दिया था। वह रक्त बीज की तरह एक बार में असंख्य मानवों के पेट में पहुच सकता था।

युद्ध क्षेत्र में पड़े मृत राक्षसों की अन्त्येष्टी कर अब ईशानेश्वर (वैश्रवण कुबेर) को इस क्षेत्र का अधिपति बनाकर, ईशानेश्वर ने भगवती कुष्मांडा का महालय बनाया। जिसे अब भी सिल्हेश्वर के नाम से जाना जाता है तथा अब भी यहाँ 27दिनों का यज्ञ होता है। वैश्रवण कुबेर ने भगवती कुष्मांडा को अपनी धर्मबहिन माना तथा महर्षि अगस्त्य को अपना त्राटा इष्टदेव घोषित किया।

आतापी-बातापी के संताप से मुक्ति दिलाने की अनुकम्पा के बदले ईशानेश्वर ने देवभूमि-तपोभूमि का यह क्षेत्र महर्षि अगस्त्य को दान किया तथा मन्दाकिनी के दायें तट पर सुन्दर रमणीक उपत्यका में मुनि देवल महालय बना दिया। जहाँ पर रहकर महर्षि अगस्त्य ने पार्थिव शिवलिंग की पूजा करना प्रारंभ किया।

लेकिन लौटने से पहले जनमानस में आतापी और वातापी एवं उसके अनुयायियों के आतंक का भय समाप्त करने के लिए अगस्त्य ने अपने वीरगणों के साथ यात्रा यज्ञ की शुरुआत की। इस यज्ञ के दौरान यहाँ आतापी-वातापी से युद्ध के दौरान अगस्त्य की सेना से जान बचाने के लिए भागकर छिपे दैत्यों, राक्षसों व राक्षस वृत्ति के नराधमों को ढूंढ ढूंढ कर मारा गया। गुप्त मार्ग से भागे राक्षसों के उस गुप्त मार्ग के मुहाने पर ही यज्ञ कुण्ड बनाकर 27दिवसीय यज्ञ प्रारंभ किया गया। राक्षसों को मारने के लिए गुप्त मार्ग के मुहाने पर बनाए गये इस कुण्ड को आज भी जगस कुण्ड (अर्थात राक्षश कुण्ड) कहा जाता है, क्योंकि अगस्त्य जी की आज्ञा पर उनके द्वारा नियुक्त प्रजा पालक ईशानेश्वर प्रत्येक 12साल में अपने अधिकार क्षेत्र की प्रजा का हाल चाल जानने के लिए क्षेत्र भ्रमण की परम्परा बनाई थी, जो आज भी प्रत्येक 12साल में आयोजित होती है। अब इस परम्परा का निर्वहन ग्राम पति (सरपंच या ग्राम प्रधान) करते हैं, लेकिन अधिपति के रूप में ईशानेश्वर जी के निशान के साथ मुनि जी की डोली को ही प्रतिनिधि के तौर पर ले जाया जाता है। अगस्त्य जी के समय में उनके द्वारा यह यात्रा एक गाँव में जाती और जनमानस का संताप दूर कर दैविक शक्तियों की पुनर्स्थापना के लिए यज्ञ अनुष्ठान करती। इससे जनता में आतापी वातापी के आतंक के भय का समापन हुआ और उनमें उत्साह का संचार हुआ। तत्कालीन समय में सर्वाधिक त्रस्त इन गाँवों को आज भी नाली-थाली गाँव कहा जाता है।

ग्राम - धारकोट,
पोस्ट - चोपड़ा (रुद्रप्रयाग)
246495

माँ मेरे चेहरे से झांकती है

इंदु परिहार

लोग कहते हैं कि
मेरी माँ अक्सर मेरे चेहरे से झाँकती है
क्योंकि उन्होंने मुझे मेरी माँ के रूप में देखा

आ ना देखती हूँ
तो अपने ललाट में प्रकट होता है
माँ का क्रोध
तो कभी माँ की ममता

माँ छाया बनकर चलती है
मेरे साथ
शरीर के बंधनों को भी पार करके
शायद वह हमें छोड़कर रह ही नहल्ल सकती
कि वापस आ जाती है लौटकर

माँ बार-बार हममें प्रकट होती है
माँ हमेशा हमारे साथ रहती है।

अंततः बिना माँओं के
पृथ्वी जीवित रह सकती है कैसे?

Hno:-1209
sec:-44/b
Chandigarh
Pariharindu@ymail.com

आहुति

सुमन किमोठी

मात भारती रक्षा करना, सरहद पर हैं अविरत वीर।
आहुति अपनी सच्ची देकर, दृढ़ता से लड़ता रणधीर।।

तेरी ममता की छाया में,पल-पल रहता वीर जवान।
बलिदानों की गाथा गाकर, आहुति देता वीर महान।।
दुश्मन की ललकार सुने तो,निर्भय रहता है वो वीर।
आहुति अपनी सच्ची देकर, दृढ़ता से लड़ता रणधीर।।

कसमें खाईं उसने तेरी, रखता हर पल है वो भान।
सीने पर गोली वो खाकर, मात भारती तेरा मान।।
कितने संकट आते उसको, डटकर रहता है वो वीर।
आहुति अपनी सच्ची देकर, दृढ़ता से लड़ता रणधीर।।

आन बान पर मिटने वाले, रच देते हैं वो इतिहास।
विजय पताका लहराते जब, मंजिल पाते अपनी पास।।
साहस शौर्य भरा है तुझमें, भारत माँ का सच्चा वीर।
आहुति अपनी सच्ची देकर, दृढ़ता से लड़ता रणधीर।।

बर्फ लदी ऊँची चोटी पे, कंधे में बन्दूकें तान।
भाल सजाता माँ का नित वो, मात भारती गाता गान।।
नमन करें हम अमर सपूतो, जय हिन्द जय हिन्द गाते वीर।
आहुति अपनी सच्ची देकर, दृढ़ता से लड़ता रणधीर।।

मात भारती रक्षा करना, सरहद पर हैं अविरत वीर।
आहुति अपनी सच्ची देकर, दृढ़ता से लड़ता रणधीर।।

चमोली
उत्तराखण्ड
9634911150

गोद लिया गाँव

सूर्य प्रकाश मिश्र

हाकिम आये दरवाजे पर बिना बुलाये
खुश है मंगरू आँखों में आँसू भर आये

बोले हमने गोद लिया है गाँव तुम्हारा
सुनकर अन्तर्धान हो गया संकट सारा
सोच रही है बुधनी अबकी बन जायेगा
मड़ई के बाजू में ही पक्का ओसारा

मिल जायेगी अस्पताल में मुफ्त दवाई
अब शायद इस टोले पर भी बिजली आये

टोले का स्कूल रोज अब खुला करेगा
राशन से सुबहित गेहूँ ही मिला करेगा
मिल जायेगा मजदूरी का पैसा पूरा
हाकिम का रुतबा जवार का भला करेगा

कटा हुआ भदवारी में चकरोड कभी का
उस पर भी शायद अब से मिट्टी पड़ जाये

लगता है हट जायेगा दारू का ठेका
हाकिम ने जिसको तिरछी नजरों से देखा
पुरखों का तालाब चमाचम हो जायेगा
जिसमें अभी गाँव का सारा मलबा फेंका

राम करे कि अगल बगल के गाँवों को भी
देख रेख करने वाला हाकिम मिल जाये

अधूरी तस्वीर

दौड़ रहा है बचपन रोटी भाग रही है
लोग कह रहे बस्ती सारी जाग रही है

लाख जतन कर डाले इस उजले विहान ने
लेकिन ये तस्वीर अधूरी पड़ी हुई है
सुबह शाम हरकारा को चीख रहा है
नई सदी की ट्रेन ठसाठस भरी हुई है

जान रहे सब ये सुविधा बस्ती की खातिर
बहुत दिनों से जलता हुआ चिराग रही है

चमकीली है आने वाले दिन की आहट
सभी शौक से ढोल नगाड़े पीट रहे हैं
जीने की जिम्मेदारी तकदीर मानकर
नाजुक कन्धे अब भी रोज घसीट रहे हैं

ने पर किस्मत बदल नहीं पाई है
ाके सदा पेट की आग रही है

ढर्रा हर रोज चला करता है
जल्दी होती सुबह रात भी थक जाती है
जंग खा रहे परियों की रानी के किस्से
सपना कैसे देखें नींद नहीं आती है

मिल ना पाया अब भी इसको लोकतन्त्र से
चाहत इसकी केवल रोटी साग रही है

बी 23/42ए के
बसन्त कटरा (गाँधी चौक) खोजवा,
दुर्गाकुण्ड, वाराणसी 221001
मो.9839888743 ।

वैदिक काल से विश्व में भारत की धमक -आचार्या रेखा कल्पदेव

आम तौर पर हमको इतिहास में विज्ञान नहीं पढ़ाया जाता है। गणित तो बिलकुल ही नहीं पढ़ाया जाता। लेकिन इन विषयों का भी अपना एक इतिहास है। जिन महत्वपूर्ण चीज़ों को हम रोज़मर्रा की बात आज समझ रहे हैं, किसी दिन ये दुनिया में नहीं थी।

जैसे 'अंक' और 'संख्या' में मामूली सा अंतर होता है। अंक सिर्फ शून्य से नौ तक ही हैं। इन्हीं अंकों को अकेले या मिला कर लिखी जाने वाली सब संख्याएँ होती हैं। शायद कुछ लोग Digit और Number कहने पर ये फर्क बता पायेंगे।

अपने खुद के गौरवशाली इतिहास के बारे में आपको क्यों नहीं पढ़ाया जाता ये सवाल आपको खुद से करना चाहिए। वैदिक काल में हम विश्व गुरु यूं ही नहीं कहलाते थे, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हम संपूर्ण विश्व से आगे थे। जिसका प्रमाण हमारे वेदों में विस्तार से देखा जा सकता है। आज नासा और अन्य वैज्ञानिक संस्थायें जिस विकास को छू भी नहीं पाई हैं, हम शोध और विकास की उन उंचाईयों को हजारों साल पहले प्राप्त करके छोड़ चुके हैं।

किसी तथाकथित 'भगवाकरण' के नाम से डराए जाने के पीछे क्या कारण रहा होगा? आत्मसम्मान और गौरव जैसी चीज़ें तो सिर्फ गुलामों से छीनी जाती हैं ना?

संपूर्ण विश्व में भारतीय विज्ञान सबसे अधिक प्राचीन और प्रामाणिक माना गया है। प्राचीन भारत में विज्ञान की दो प्रमुख धारायें सबसे प्राचीन मानी गई हैं। एक है गणित और खगोल विज्ञान तथा दूसरी है औषधि विज्ञान, जो आयुर्वेद के नाम से विख्यात है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने अपने भारत में विज्ञान विषय पर दिये गए वक्तव्य में कहा था कि 'विश्व गणित और चिकित्सा के क्षेत्र में सदैव भारत का ऋणी रहेगा, जिसने उन्हें जीना और आगे बढ़ना सिखाया।'' वास्तव में यदि भारत विश्व को गणित का नहीं देता तो विश्व का आगे बढ़ना मुश्किल था।

आर्यभट के 'आर्यभटीयम्' से ज्ञात होता है कि चौथी शताब्दी तक भारत में गणित और ज्योतिष के क्षेत्र में कितनी प्रगति हो चुकी थी। वराहमिहिर के ग्रन्थ अपने समय के ज्ञान कोश रहे हैं। ब्रह्मगुप्त के ग्रन्थों से पता चलता है कि भारत के पौराणिक विचारों ने वैज्ञानिक चिन्तन को किस प्रकार से प्रभावित किया। आज जिन अंक संकेतों को हम अंग्रेजी भाषा का मानते हैं, वे अंक-संकेत प्राचीन ब्राह्मी अंक संकेतों से विकसित हैं। शास्त्र के रूप में 'गणित' का प्राचीनतम प्रयोग लगध ऋषि द्वारा प्रोक्त वेदांग ज्योतिष नामक ग्रन्थ के एक श्लोक में माना जाता है। पर इससे भी पूर्व छान्दोज्ञ उपनिषद् में सनत्कुमार के पूछने पर नारद ने जो 18 अधीत विद्याओं की सूची प्रस्तुत की है, उसमें ज्योतिष के लिये 'नक्षत्र विद्या' तथा गणित के लिये 'राशि विद्या' नाम प्रदान किया है। इससे भी प्रकट है कि उस समय इन शास्त्रों की तथा इनके विद्वानों की अलग-अलग प्रसिद्धि हो चली थी। आगे चलकर इस शास्त्र के लिये अनेक नाम विकसित होते रहे।

भारत में अन्य शास्त्रों के विद्वान भी गणित की भावना से ओत-प्रोत रहे हैं। उन शास्त्रों के अलग अलग प्रसंगों में गणित विषयक जानकारियाँ बिखरी पड़ी हैं। पाणिनि ने गणित के अनेक शब्दों की सूक्ष्म विवेचना की है। उन्होंने उस समय की

आवश्यकतानुसार प्रतिशत के स्थान पर मास में देय ब्याज के लिये एक 'प्रतिदश' अनुपात का उल्लेख किया है। चक्रवृद्धि ब्याज द्वारा सर्वाधिक बढ़ी हुई रकम को 'महाप्रवृद्ध' बताया है। पिंगल विरचित छन्दशास्त्र में छन्दों के विभेद को वर्णित करने वाला 'मेरुप्रस्तार' पास्कल के त्रिभुज से तुलनीय बनता है। वेदों के क्रमपाठ, घनपाठ आदि में गणित के श्रेणी-व्यवहार के तत्त्व वर्तमान हैं।

प्राचीन भारत में गणित और ज्योतिष का विकास साथ-साथ हुआ। भास्कराचार्य, आर्यभट्ट और ब्रह्मगुप्त जैसे श्रेष्ठ गणित ज्योतिषज्ञों की कृतियाँ इसको प्रमाणित करती हैं। भारत के द्वारा विश्व को दी गई शून्य और दशमलव की अनुपम देन से सभी परिचित हैं। आधुनिक बीजगणित एंव त्रिकोणमिति की मूल भूमि भारत है। इसकी अनेक विधियाँ सूर्य सिद्धान्त एवं आर्यभट्ट की कृतियों में मिलती है। भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियाँ जिनसे भारतीय समाज अनभिज्ञ रहा है या जिन्हें जानने का प्रयास ही नहीं किया गया, उससे समाज को परिचित कराना हमारा दायित्व है।

प्रथम हम गणित को ही ले लेते हैं। यहाँ यह ध्यान रखना चाहिए कि प्राचीन भारत में वर्तमान अफगानिस्तान से बर्मा तक का क्षेत्र शामिल रहा है। ग्यारहवीं सदी का समय था जब भारत में गोपाल और हेमचंद्र ने संस्कृत छंदों के अक्षरों की संख्या और गणित में रोचक संबंध ढूंढ निकाले थे। इस संबंध को ही आज हम फिबोनकी श्रेणी के नाम से जानते हैं, जो प्रकृति में कई फूलों की पंखुड़ियों की संख्या में भी पाया जाता है और जिसकी खोज कालांतर में पीसा, इटली के लियोनार्डो ने 50-80 साल बाद की। मनुष्य द्वारा निर्मित संस्कृत छंदों के अक्षरों की संख्या और प्रकृति निर्मित फूलों की पंखुड़ियों की संख्या में कोई संबंध से कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति परेशान हो सकता है। एक अन्य असाधारण उदाहरण, जिस पर मंजुल ने प्रकाश डाला, वह है लगभग 200 वर्ष ईसापूर्व में प्राचीन भारतीय कवि पिंगल द्वारा संस्कृति छंदों में द्विपदीय संरचना का आविष्कार करना। उन्होंने फ्रेंच गणितज्ञ पास्कल के अंकगणितीय त्रिकोण की संधि जिसे हम आज पास्कल के त्रिकोण के नाम से पढ़ते हैं, से लगभग 1800 वर्ष पहले ही ढूंढ निकाला था।

अन्य उदाहरणों में आधुनिक सूत्रों, सिंक्रोनाइजेशन जैसी तकनीकें और संस्कृत साहित्य में औपचारिक परिभाषाएँ शामिल हैं। ये सभी आधुनिक खोजें या कुछ मामलों में फिर से की गई खोजें हैं जो कम्प्यूटर की भाषा से लेकर बेतार संचार तक, जीवन के हरेक आयाम को प्रभावित करती हैं।

हालांकि यह कहना अतिश्योक्ति ही होगी कि हमारे पूर्वजों को कम्प्यूटर की भाषा आती थी या उन्हें बेतार के तार की जानकारी थी। यह कहना ऐसा ही होगा मानो हम कहें कि कॉपरनिकस ने चाँद पर जाने वाला यान बना लिया था। इसकी बजाय ये उदाहरण यह बतलाते हैं कि हमारे देश में हजारों वर्ष पूर्व से एक जीवंत सभ्यता थी जिसमें ऐसे असाधारण विचार और सिद्धांत पैदा हुए थे जिनका हमारे आज के जीवनशैली से मौलिक व गहरा संबंध है। काल के चक्र में हम अपने उस इतिहास के ज्ञान और उसके साथ ही गौरव के भाव तथा आधुनिक जीवन को प्रभावित करने की अपनी क्षमता को भुला बैठे हैं।

अपने अतीत से हमारी अनभिज्ञता का बड़ा कारण हमारी व्यवस्था ही है। एक समय था कि हमारे पास उन्हें समझने के लिए अधिक सक्षम सांस्कृतिक पृष्ठभूमि थी। हम प्राचीन भारत के पिछले हजार वर्ष से पहले की किसी भी कहानी, कविता, नाटक, राजनीतिक जीवन, दर्शन, गणित, विज्ञान, समाज जीवन आदि के बारे में कुछ भी नहीं जानते। एक आम शहरी शिक्षित व्यक्ति की भांति हम प्राचीन भारत के बौद्धिक योगदान से पूरी तरह अनभिज्ञ

हैं। हमें केवल इतिहास की कुछेक तिथियों और सिंधु घाटी सभ्यता, अशोक और चंद्रगुप्त मौर्य आदि के बारे में कुछ जानकारियाँ हैं और सच पूछा जाए तो हमें उनकी भी गहरी समझ नहीं है।

एक भारतीय के रूप में हमने प्लेटो, अरस्तु, पाइथागोरस, कॉपरनिकस, न्यूटन, लिबनिट्ज, पास्कल, गैलोइस, यूलर आदि और उनके योगदान के बारे में ठीक से पढ़ा हुआ है, लेकिन इसके विपरीत हमने आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, पिंगल, कालीदास, हेमचन्द्र, माधव, न्याय या मीमांसा सूत्रों आदि के बारे में कुछ भी नहीं पढ़ा।

लेकिन इन सबकी चिंता क्यों की जाए? आखिरकार हम उस अतीत का कभी भी हिस्सा नहीं थे और आज के यथार्थ से उन्हें इस प्रकार हटा दिया गया है कि अतीत से किसी भी प्रकार का सूत्र ढूंढना अप्रासंगिक है। लेकिन मेरा मानना है कि इस अतीत को ढूंढना अत्यन्त आवश्यक ही नहींअपितु अनिवार्य होना चाहिए जिससे हम अपनी जड़ों के खोज सकें।

उन विषयों जिनका कि मैंने ऊपर उदाहरण दिया है, विद्यालयों में पढ़ाए जाने वाले विषयों की तुलना में कहीं से भी कम प्रासंगिक नहीं है। इसके अलावा प्राचीन भारत के ये ज्ञान के स्रोत रचनात्मक मानवीय विचार की उपज हैं और पूरे विश्व के लिए उपयोगी हैं। उदाहरण के लिए किसी भी बच्चे को गणित, आज के गणितज्ञों द्वारा प्रतिपादित शुष्क और जड़ तरीकों की बनिस्पत कविता के माध्यम से पढ़ना अधिक लाभकारी व रोचक लगेगा।

राष्ट्रीय पहचान एक जटिल प्रक्रिया है, कुछ मायनों में इसका सम्बंध उन्नत ज्ञान और मानव के जीवन-स्तर के विकास में समाज द्वारा किए जाने वाले बौद्धिक योगदान से भी है। हम जैसे अनेक लोगों के लिए न्यूटन तब एक हीरो बन जाते हैं, जब हम जानते हैं कि किस प्रकार उन्होंने विश्व के मूल सिद्धांतों को उद्घाटित किया। पश्चिमी जगत के महान साहित्य और दर्शन ने हमें मनुष्य की अवस्था को समझने में सहायता की। पश्चिमी जगत के इन उदाहरणों ने हमारे मन में उन समाजों के प्रति काफी सम्मान पैदा किया जिन्होंने इस उत्सुकता को जन्म दिया, पाला-पोसा और बढ़ाया। इसी प्रकार हम भारत के अतीत, उसके गंभीर तथा बहुमुखी विचारों व सिद्धांतों के बारे में भी एक समझ विकसित करने के पक्ष में हैं, जो पश्चिमी जगत की उन विभूतियों से किसी रूप में कम असाधारण नहीं हैं।

हमारा यह कहना नहीं है कि हम अन्य समाजों व सभ्यताओं के योगदानों का सम्मान करना छोड़ दें, बल्कि हमारे पास भी बताने के लिए काफी कुछ है यदि हम निष्पक्ष भाव से अनुसंधान और परीक्षण करें और प्राचीन भारत के बौद्धिक इतिहास को मान्यता दें। हमें यह जान कर आश्चर्य हो सकता है कि यह हमारे आज के समाज से कहीं अधिक उदार, सहिष्णु और विविधतापूर्ण समाज रहा है।

अब तनिक प्राचीन वैदिक भारत की विश्व को देन की ओर दृष्टिपात करें तो पायेंगे-

1. जब कई संस्कृतियाँ 5000 साल पहले ही घुमंतू जंगली और खानाबदोश थीं, तब भारतीयों ने सिंधु घाटी (सिंधुघाटी सभ्यता) में हड़प्पा संस्कृति की स्थापना की

2. बीज गणित, त्रिकोण मिति और कलन का अध्ययन प्राचीन भारत में ही आरंभ हुआ था।

3. 'स्थान मूल्य प्रणाली' और 'दशमलव प्रणाली' का विकास भारत में 100 बी सी में हुआ था

4. शतरंज की खोज भारत में की गई थी।

5. विश्व का प्रथम ग्रेनाइट मंदिर तमिलनाडु के तंजौर में बृहदेश्वर मंदिर है। इस मंदिर के शिखर ग्रेनाइट के 80 टन के टुकड़े से बने हैं। यह भव्य मंदिर राजा राज चोल के राज्य के दौरान केवल 5 वर्ष की अवधि में (1004 ए डी और 1009 ए डी

के दौरान) निर्मित किया गया था।

6. सांप सीढ़ी का खेल तेरहवीं शताब्दी में कवि संत ज्ञान देव द्वारा तैयार किया गया था इसे मूल रूप से मोक्षपट कहते थे। इस खेल में सीढियाँ वरदानों का प्रतिनिधित्व करती थीं जबकि सांप अवगुणों को दर्शाते थे। इस खेल को कौड़ियों तथा पांसे के साथ खेला जाता था। आगे चल कर इस खेल में कई बदलाव किए गए, परन्तु इसका अर्थ वही रहा। अर्थात अच्छे काम लोगों को स्वर्ग की ओर ले जाते हैं जबकि बुरे काम दोबारा जन्म के चक्र में डाल देते हैं।

7. विश्व का सबसे प्रथम विश्वविद्यालय 700. बी सी में तक्षशिला में स्थापित किया गया था। इसमें 60 से अधिक विषयों में 10,500 से अधिक छात्र दुनियाभर से आकर अध्ययन करते थे। नालंदा विश्वविद्यालय चौथी शताब्दी में स्थापित किया गया था जो शिक्षा के क्षेत्र में प्राचीन भारत की महानतम उपलब्धियों में से एक था।

8. आयुर्वेद मानव जाति के लिए ज्ञात सबसे आरंभिक चिकित्सा पद्धति है। शाखा विज्ञान के जनक माने जाने वाले चरक ने 2500 वर्ष पहले आयुर्वेद का समेकन किया था ।

9. नौवहन की कला और नौवहन का जन्म 6000 वर्ष पहले सिंध नदी में हुआ था। दुनिया का सबसे पहला नौवहन संस्कृत शब्द नव गति से उत्पन्न हुआ है। शब्द नौ सेना भी संस्कृत शब्द नोउ से उत्पन्न हुआ है।

10. भास्कराचार्य ने खगोल शास्त्र के कई सौ साल पहले पृथ्वी द्वारा सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने में लगने वाले सही समय की गणना की थी। उनकी गणना के अनुसार सूर्य की परिक्रमा में पृथ्वी को 365. 258756484 दिन का समय लगता है।

11. भारतीय गणितज्ञ बुधायन द्वारा 'पाई' का मूल्य ज्ञात किया गया था और उन्होंने जिस संकल्पना को समझाया उसे पाइथागोरस का प्रमेय करते हैं। उन्होंने इसकी खोज छठवीं शताब्दी में की, जो यूरोपीय गणितज्ञों से काफी पहले की गई थी।

12. बीज गणित, त्रिकोण मिति और कलन का उद्भव भी भारत में हुआ था। चतुष्पद समीकरण का उपयोग 11वीं शताब्दी में श्री धराचार्य द्वारा किया गया था। ग्रीक तथा रोमनों द्वारा उपयोग की गई सबसे बड़ी संख्या 106 थी, जबकि भारतीयों ने 10'53 जितने बड़े अंकों का उपयोग (अर्थात 10 की घात 53), के साथ विशिष्ट नाम 5000 बीसी के दौरान किया। आज भी उपयोग की जाने वाली सबसे बड़ी संख्या टेरा: 10'12 (10 की घात12) ही है।

13. सुश्रुत को शल्य चिकित्सा का जनक माना जाता है। लगभग 2600 वर्ष पहले भारतीय आचार्यों यथा सुश्रुत और उनके सहयोगियों ने मोतियाबिंद, कृत्रिम अंगों को लगना, शल्य क्रिया द्वारा प्रसव, अस्थिभंग जोड़ना, मूत्राशय की पथरी, प्लास्टिक सर्जरी और मस्तिष्क की शल्य क्रियाएँ आदि सफलता पूर्वक सम्पन्न की थीं।

14. निश्चेतक का उपयोग भारतीय प्राचीन चिकित्सा विज्ञान में भली भांति ज्ञात था।

शारीरिकी, भ्रूण विज्ञान, पाचन, चयापचय, शरीर क्रिया विज्ञान, इटियोलॉजी, आनुवांशिकी और प्रतिरक्षा विज्ञान आदि विषय भी प्राचीन भारतीय ग्रंथों में पाए जाते हैं।

15. युद्ध कलाओं का विकास सबसे पहले भारत में किया गया और ये बौद्ध धर्म प्रचारकों द्वारा पूरे एशिया में फैलाई गई थीं।

16. योग का उद्भव भारत में हुआ है और यहाँ 5,000 वर्ष से अधिक समय से मौजूद है, जिसे आज पूरा विश्व अपना रहा है।

नोयडा
8178677715

अपने कंकाल के अवलोकन को बनाएं ध्यान का सोपान

-डॉ. विकास मानव

इस धरती पर हम समस्त प्राणी अपने केन्द्र के साथ अवतरित होने के बाद भी इससे अनभिज्ञ रहते हैं। केन्द्र को 'जाने बिना' हम रह तो सकते हैं लेकिन 'बिना केन्द्र के' हो नहीं सकते। यह केन्द्र मनुष्य और उसके अस्तित्व के बीच की कड़ी, 'मूल', आधार है। केन्द्र से अनभिज्ञता की दशा में जीवन जड़विहीन होता है। हमें अपने पैरों के नीचे जमीन का अनुभव नहीं होता। हम 'आधारित' नहीं पाते अपने आप को। जगत में अपनापन नहीं, अजनबीपन-परायापन इसीलिए महसूस होता है। केन्द्र से जीवंत तादात्म्य न होने से जीवन हवा में तिनके की भाँति भटकता हुआ, लक्ष्यहीन, अर्थहीन, रिक्त मालूम पड़ता है। हम जीने को एक क्षण से दूसरे क्षण के लिए स्थगित करते जाते हैं और यह स्थगन हमें कहीं नहीं पहुँचाता। केन्द्र का ज्ञान व दर्शन कराता है ध्यान। इस ध्यान का सर्वाधिक कारगर आयाम बन सकता है नर कंकाल। अपने अस्थिपिंजर का साक्षात्कार। सर्वाधिक प्राचीन और सरल ध्यान विधि है- मेरुदंड पर केन्द्रित होना।

कंकाल अथवा मेरुदंड से अगर आप परिचित नहीं हैं तो किसी शरीर विज्ञान की पुस्तक, चिकित्सालय या मेडिकल कॉलेज के सहयोग से शरीर की सरंचना को पहले समझ लें। ध्यान के लिए बैठते समय आँखें बंद करें और अपने मेरुदंड को, रीढ़ की हड्डी को देखने का प्रयास करें। मेरुदंड को भीतर की आँख से देखें और ठीक उसके मध्य से जाते हुए, 'कमल-तंतु' जैसे कोमल स्नायु का भाव करें।

समूची शरीर-संरचना का आधार होता है मेरुदंड। हमारे शरीर का सब कुछ संयुक्त रूप से इसी मेरुदंड से जुड़ा हुआ है। मस्तिष्क भी इसी का एक छोर है, विकास है। यही रीढ़, सारे शरीर से संबंधित है और सब कुछ रीढ़ से संबंधित है। इसे रीढ़ या आधार इसीलिए कहते हैं। इस मेरुदंड के ठीक मध्य में एक रजत-रज्जु, अत्यंत कोमल नाजुक स्नायु है। यह अपदार्थ, अवस्तु है। यह उर्जा है। इसे लेबरोटरी में सिद्ध अथवा वाह्य आँखों के सामने प्रत्यक्ष्य नहीं किया जा सकता। दृश्य और अदृश्य के बीच सेतु का काम करने वाली यह उर्जा हमारा जीवन है जो गहरे ध्यान में ही दर्शनीय है। तो पहले मेरुदंड की कल्पना करें, उसे मन की आँखों से देखें। मेरुदंड का मनोदर्शन धीरे-धीरे प्रत्यक्ष दर्शन का आधार बन जायेगा। यथार्थ में अपना मेरुदंड दिखने लगेगा और तब हमको जो अनुभव होगा वह अद्भुत होगा।

हम दूसरे का कंकाल देखते हैं तो किंचित चौंकते हैं। हमारे लिए अपना अस्थिपिंजर देखने की सोचना भी संभव नहीं होता। मनुष्य भीतर से अपने शरीर संस्थान को देख सकता है: प्राचीन संबुद्ध रहस्यदर्शियों की तरह। हम अपने संपूर्ण शरीर के साक्षात्कार की दशा में नहीं आना चाहते (आत्मसाक्षात्कार की चाहत रखते हैं। हम कोशिश नहीं करते क्योंकि दृश्य डरावना, वीभत्स प्रतीत होता है। हम सोचते हैं कि अपना ही रक्त-मांस अथवा अस्थिपिंजर देखकर हम भयभीत हो जायेंगे।

यदि हममें इतना भी साहस नहीं है तो अत्मसाक्षात्कार अथवा भगवद्दर्शन की बात बेमानी है।

भारतीय योगदर्शन की तमाम बातें वैज्ञानिक शोध के दौरान सही साबित हुई हैं। विज्ञान यह समझने में असमर्थ है कि योगियों को यह सब कैसे पता चला। शल्य-चिकित्सा और जीव विज्ञान तो बहुत बाद की घटनाएँ हैं। सभी स्नायुओं, सभी केन्द्रों, शरीर के समस्त आंतरिक संस्थानों का ज्ञान योगियों को कैसे हो सका, विज्ञान भी पता नहीं लगा पाया परन्तु योग के पास शरीर को देखने का एक दूसरा ही रास्ता है, उसे अंदर से देखना। यही देह-दर्शन, आत्म-दर्शन/प्रभु-दर्शन का सोपान बन जाता है।

तांत्रिक अपने पास खोपड़ी या दूसरी हड्डी रखता है। यह परंपरा भीतर से एकाग्रता साधने के लिए अस्तित्व में लाई गई थी। साधक इस खोपड़ी पर एकाग्र होकर आँखें बंद करता और अपनी खोपड़ी का ध्यान व उसके दर्शन का प्रयास करता है। धीरे-धीरे अपनी खोपड़ी उसे दिखने लगती है और उसकी चेतना केन्द्र से जुड़ जाती। उपाय कोई भी हो, एक बार अपने भीतर केन्द्रीभूत हो जाने पर हमारी अन्तर्यात्रा सहज हो जाती है। अपने ही भीतर हमें पूरा ब्रह्माण्ड दिखने लगता है। यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे। मेरुदंड-दर्शन की इस विधि में रीढ़ की हड्डी सीधी रखना जरूरी होता है। ऐसा न होने पर भीतरी रज्जु को देखना असंभव हो जाता है, क्योंकि वह बहुत नाजुक और सूक्ष्म है। रज्जु पर एकाग्र होकर उसकी उपलब्धि-अनुभूति करने पर आप एक प्रकाश से भर जायेंगे। मेरुदंड से नि:सृत यह प्रकाश आपका आभामण्डल अथवा प्रभामण्डल होगा जो पूरे शरीर पर फैल जायेगा।

सर्वप्रथम अपने मेरुदंड को देखें। कुछ दिनों के सतत् प्रयास के बाद मेरुदण्ड के बीच से जाती हुई रजत-रज्जु का अवलोकन करें। पहल कल्पना से होगी किंतु धीरे-धीरे आप पायेंगे कि कल्पना विलीन हो गई है और अपका चित्त मेरुदंड पर एकाग्र हो गया है। आंतरिक तत्व को देखने पर प्रकाश का विस्फोट सहज हो जायेगा। कभी-कभी गहरे काम-कृत्य में भी यह घटना घटती है। गहन काम-कृत्य में हमारी सारी उर्जा रीढ़ के पास इकट्ठी हो जाती है। रीढ़ बिजली छोड़ने लगती है। इसके लिए काम-कृत्य को सर्वथा भिन्न ढंग का होना पड़ेगा। उसका गुण-धर्म भिन्न होगा। ऐसा तब होगा जब काम-कृत्य किसी तरह निबट लेने, स्खलन द्वारा उर्जा को बाहर फेंककर छुट्टी पा लेने वाला दैहिक कर्म न होकर एक गहन प्रेम-मिलन/योग होगा। दो देहों द्वारा, दो आंतरिकताओं-दो आत्माओं का परस्पर प्रवेश होगा। संसर्ग पवित्र-प्रेमिल भावनाओं से युक्त, गहरा, स्खलन विहीन, लम्बा हो और शांत-निश्चल अवस्था में प्रगाढ़ प्रेमालिंगन की स्थिति बने तब घटना घटती है। यहाँ भी यौन को एवं एक-दूसरे को भूलकर भीतर प्रवेश करना होगा और मेरुदंड को देखना होगा।

(लेखक 'मैडिटेशन रिसर्च फाउण्डेशन क्लोरिडा यूएसए' द्वारा अधिकृत ध्यान-प्रशिक्षक हैं।)

किसी तरह की अन्य जानकारी अथवा नि:शुल्क सहयोग हेतु 09997741245 पर संपर्क किया जा सकता है।

यूँ ही मन कुछ बोझिल सा था

-लोकेष्णा मिश्रा

मेरे कमरे का बड़ा सा झरोखा
कराता है आभास मुझे पूरी
एक-जिंदगी का
दूर स्वच्छ आसमां से ढकी नीली पहाड़ियां
फल और फूलों से पोषित वृक्ष
कोयल की कूँ-कूँ ,
रंग -बिरंगी चिड़ियों का इठलाना
बारिश में भीगी तोत चिड़िया का चीं-चीं करके
मुझसे खिड़की खोलने की मनुहार करना
गाय का भोजन -पानी के लिए राम्हाना
दूर से आते-जाते दिखते आधे-अधूरे वाहन
कभी शहनाइयों की धुन, कभी एम्बुलेंस का सायरन
वी आई पी गाड़ियों की आवाजें,
कभी फ़िल्मी धुनों के सायरन
किसी वाहन से जब अचानक से ब्रेक लगते हैं
तो दिल जोर से दहल जाता है
शाम होते -होते जब धुंधलका छाने लगता है
पक्षी वापस अपने घरोंदे में जाने लगते हैं
वाहनों की आवाजें कुछ और तेज हो जाती हैं
शायद सभी को मंजिल पाने की जल्दी है
रात में दौड़ते वाहनों से लगता है मानो
जमीं पर सितारे झिलमिला रहे हों
अब पहाड़ियों की जगह केवल
धीमी -धीमी रोशनी दिखती है
दूर तक एक आभासी उजाला
और जुगनुओं की जगमगाहट है
पर आवाजें अभी -भी शेष हैं !
कमलताल से बहार निकले मेढकों की टर-टर
और झिगुरी की झीं-झीं
10 :30 की मंजिल पर पहुँचती 'संपर्क -क्रांति'
मानो दरवाजे पर ही आ रुकेगी
छोटी -छोटी गाड़ियाँ हवा से बातें करतीं
जूम से निकलतीं,
यकीं कराती हैं कि
रात होने पर भी
नि:शब्द नहीं होता कुछ भी
सब चलता रहता है, अविरल
कभी धीमा
कभी तेज
फिर भी एक कमी महसूस करती हूँ
मैं कमरे के इस झरोखे में,
कि यहाँ से
'उगता सूरज' नहीं दिखता
हाँ, 'ढलता सूरज' देखना चाहूँ, तो
दूसरी ओर के झरोखे से दिख जाता है
यही झरोखा मुझे 'चांदनी रातों'
में बहुत लुभाता है
क्योंकि इसी झरोखे से
'मयंक' रात को
मुझसे मिलने आता है ।

श्री राम औषधालय
हल्द्वानी

बात किताब की

-आशा शैली

पिछले दिनों हिमाचल प्रदेश के चर्चित उपन्यासकार का सद्य प्रकाशित ऐतिहासिक उपन्यास एक थी रानी खैरागढ़ी हाथ आया। उपन्यास था, वह भी एक प्रोफेसर का लिखा हुआ, तो रोचकता भी होनी ही चाहिए। सो, उठते-बैठते ही पढ़ डाला।

हिमाचल में स्वतंत्रता पूर्व बहुत-सी छोटी-बड़ी रियासतें थीं, जिनमें मण्डी एक एवं समर्थ रियासत रही है। इसी मण्डी रियासत की अंतिम रानी रही हैं यह रानी खैरागढ़ी। सो उपन्यास मण्डी की तत्कालीन व्यवस्था के बखिए अच्छी तरह उधेड़ता पाया गया। उपन्यास का हर पात्र मंडयाली भाषा का प्रयोग करता दिखाई देता है जो उपन्यास के लिए स्वाभाविक भी है और आवश्यक भी।

रानी खैरागढ़ी हिमाचल के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में यदि झांसी की लक्ष्मी बा नहल तो उससे कम भी नहल, पर इनके बारे जानकारी बहुत कम उपलब्ध है क्योंकि इनकी फाइलें ब्रिटश सरकार ने जला दी हैं।

इनका नाम ललिता था किन्तु खैरागढ़ से सम्बंध होने के कारण ये रानी खैरागढ़ी पुकारी जाने लगीं। प्राप्त जानकारी के अनुसार रानी ने क्रान्तिकारियों की हर तरह से सहायता की है। यह मण्डी रियासत के राजा भवानीसेन की पत्नी थीं अत: भवानी सेन की विवाह पूर्व घटनायें उपन्यास में बहुतायत में होना स्वाभाविक है।

अच्छी बात यह है कि उपन्यास में न तो घटनाक्रम के साथ और न ऐतिहासिक तथ्यों के साथ छेड़छाड़ की गई है। बल्कि उन सब को तिथि सहित ज्यों का त्यों रखा गया है। सत्ता हथियाने के लिए क्या-क्या छल प्रपंच महलों में चलते हैं उन सब को भी उपन्यास में दर्शाया गया है परन्तु उपन्यास का अधिकांश भाग रियासत के भ्रष्ट अधिकारियों, जनता एवं अन्य विद्रोही क्रान्तिकारियों की गतिविधियों से भरा है, जो होना भी चाहिए। हाँ! रानी खैरागढ़ी के बारे में बहुत कम उल्लेख हुआ है, जबकि और अधिक उल्लेख रानी का हो सकता था। हालांकि यह सब आवश्यक भी था जो रानी के व्यक्तित्व का परिचय देता है, फ़िर भी रानी के व्यक्तित्व को और अधिक स्थान मिलना चाहिए था।

प्रोफेसर गंगाराम राजी ने उपन्यास में रानी को मैदानी भाग की कन्या बताया है जबकि मेरे विचार से यह सही नहीं है।

वर्तमान उत्तराखण्ड के गढ़वाल मण्डल में खैरागढ़ एक प्राचीन पहाड़ी रियासत रही है। रानी खैरागढ़ी के परिचय में कृष्णकुमार नूतन जी ने उनकी एक पूर्वजा की चर्चा की है जिन्होंने बहुत कम आयु में बहुत से युद्ध जीते थे।

इतिहास पर दृष्टिपात करें तो हमें पता चलता है कि हिमाचल की रियासतों के राजपरिवारों के साथ गढ़वाली राजपरिवारों के सम्बंध रहे हैं। गुरु गोविंद सिंह जी के समय में राजा भीमचन्द के बेटे का विवाह गढ़वाल के राजा फतेहशाह की बेटी से हुआ था। इसी तरह ईसवी सन् 1661 में गढ़वाल मण्डल की खैरागढ़ रियासत के सामन्त गंगू गोरला की बेटी तीलू या तिलोत्तमा एक वीर रमणी हुई हैं और इतिहास में अपना नाम उसी तरह लिखवाने में सफल हुई हैं, जिस प्रकार वर्मतमान में महारानी लक्ष्मी बाई ने अंग्रेज सरकार से दो-दो हाथ करके अपना नाम इतिहास में लिखवाया था।

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए रानी खैरागढ़ी का सम्बंध गढ़वाल के पहाड़ी क्षेत्र से होना अधिक उचित लगता है, मैदान से नहीं। इतना ही नहीं, इन पहाड़ी रियासतों में वीरांगना रानी

कर्णावती ने औरंगजेब के लगभग एक हज़ार सिपाहियों की नाक काटकर ही उन्हें पहाड़ों से निकलने का रास्ता दिया था, इसलिए वह नाककाटी रानी के नाम से जानी गई। मुगलों से लोहा लेने के लिए जिया रानी आदि और भी वीरांगनाओं के नाम मिलते हैं जिनके शौर्य के सामने शत्रु पानी मांगते दिखाई देते थे। मेरा मत है कि उपन्यास के दूसरे संस्करण में प्रोफेसर गंगाराम राजी को कुछ संशोधन कर लेने चाहिए। हालांकि रानी खैरागढ़ी की फाइल अंग्रेजों द्वारा जला दिए जाने के कारण उनके बारे में अधिक तथ्यपरक सामग्री का अभाव तो है फिर भी अभी मण्डी के कुछ बुजुर्ग लोगों के पास इन से सम्बंधित सामग्री मिल सकती है।

कुल मिलाकर एक अच्छे प्रयास की सराहना की ही जानी चाहिए। सबसे अच्छी बात यह है कि प्रोफेसर राजी ने इतिहास को ज्यों का त्यों परोसने की पहल की है, इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

7055336168

सांकेतिक मूल्य पर पसंदीदा पुस्तकें खरीदने का अवसर

बोधि प्रकाशन अक्सर अपने नवीनतम प्रयोगों के साथ पाठक और लेखक को जोड़ने का प्रयास करता है।

इसी कड़ी में लेकर आए हैं ये 'पुराना खजाना योजना'। आप भी इस अवसर का लाभ उठाइए और चाहें तो सूचना को अपने मित्रों तक भी पहुँचाएँ। लेखक और पाठक, दोनों को ही लाभ है।

पुराना-खज़ाना

बोधि प्रकाशन के उपलब्ध स्टॉक में से कुछ महत्वपूर्ण एवं चुनिंदा पुस्तकें 'पुराना खज़ाना' योजना के अन्तर्गत नाममात्र मूल्य (मात्र 220 रुपये में दस पुस्तकें, डाक/कूरियर व्यय सहित) पर पाठकों के लिए उपलब्ध करा जा रही हैं। उपलब्ध पुस्तकों की सूची की पीडीएफ पाठकों की मांग पर उनको इनबॉक्स अथवा व्हाटसएप पर भेज दी जाएगी। आप सूची में अपनी पसंद की दस पुस्तकें चुन सकते हैं। इस तरह आप दस-दस पुस्तकों के कितने भी सेट अपनी जरूरत अनुसार ले सकते हैं। योजना सीमित समय (स्टॉक की उपलब्धता अथवा नियत तिथि तक) के लिए है। कोई पुस्तक विशेष की उपलब्धता समाप्त होने पर सूची में से अन्य पुस्तक चुनने का विकल्प मौजूद रहेगा। सूची को अंतिम रूप दिया जा रहा है कल यानी 26 जुलाई तक सब इच्छुक पाठक मित्रों को सूची भेज दी जाएगी।

आशा है बोधि की अब तक की अन्य योजनाओं की तरह यह योजना भी पाठकों को रुचेगी। सूची मंगवाने के लिए कमेंट में लिखकर, इनबाक्स अथवा 96605 20078 पर व्हाटसएप के जरिये संपर्क कर सकते हैं।

प्रविष्टियां आमन्त्रित हैं...

कृपया विज्ञप्ति पूरी तरह से पढ़ने के बाद ही आगे बढ़ें.
अंतिम तिथि की प्रतीक्षा नहीं करें...

अखिल भारतीय प्रतियोगिता हेतु कहानी संग्रह आमंत्रित

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक नवोन्मेष हेतु नवगठित संस्था 'वैखरी' द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर 'गोवर्धन लाल चौमाल कहानी पुरस्कार 2023' हेतु कहानी संग्रह आमंत्रित किए जाते हैं. विस्तृत नियमावली निम्नानुसार है

1. प्रतियोगिता में काई भी लेखक भाग ले सकता है।
2. कहानी संग्रह हिन्दी भाषा में होना अनिवार्य है।
3. संग्रह की पृष्ठ संख्या न्यूनतम 96 होनी आवश्यक है।
4. पुस्तक के किसी भी पृष्ठ पर कुछ भी अर्थात कोई शुभकामना संदेश, हस्ताक्षर या सादर भेंट जैसा अंकित नहीं किया जाए।
5. संग्रह का प्रथम संस्करण 1 जनवरी 2021 या उसके पश्चात प्रकाशित होना चाहिए।
6. संग्रह की दो प्रतियाँ मय संक्षिप्त परिचय भेजनी आवश्यक है।
7. विजेता को स्वयं उपस्थित होकर पुरस्कार ग्रहण करने की अनिवार्यता है। अपरिहार्य कारणों/ परिस्थितियों में, आयोजकगण से अनुमति लेकर किसी प्रतिनिधि को भेजा जा सकता है।
8. विजेता पुरस्कार राशि 11,000 (ग्यारह हजार मात्र) होगी. द्वितीय एवं तृतीय विजेता को क्रमशः 2100 (इक्कीस सौ) एवं 1100 (ग्यारह सौ) मूल्य का साहित्य भेंट किया जाएगा।
9. निर्णायकों का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा।
10. विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर होगा।
11. प्रविष्टियां दिनांक 15 सितंबर 2023 तक भिजवाई जा सकती हैं. तय तिथि के पश्चात मिलने वाली किसी भी प्रविष्टि पर विचार नहीं किया जाएगा. आयोजक डाक में देरी के जिम्मेदार नहीं होंगे.
12. जानकारी के लिए 8387062611 या 9413369571 पर संपर्क किया जा सकता है.
13. प्रविष्टि निम्न पते पर भेजें.

इंजी. आशा शर्मा
। 123, करणी नगर (लालगढ़)
बीकानेर 334001
9413369571

साहित्य समाचार

देश के प्रख्यात साहित्यकारों को नवाज़ा गया गजानन माधव मुक्तिबोध पुरस्कार से

मथुरा के ख्यातिलब्ध साहित्यकार डॉ. दिनेश पाठक 'शशि', हल्द्वानी से डॉ. प्रभा पंत और इंजी. आशा शर्मा सहित अन्य साहित्यकारों को हिन्दी साहित्य के प्रति समर्पण के मूल्यांकन स्वरूप दिनांक 25 जुलाई 2023 को रविन्द्र भवन भोपाल में मध्यप्रदेश की संस्कृति व पर्यटन मंत्री सुश्री उषा ठाकुर, प्रख्यात अभिनेता व साहित्यकार श्री आशुतोष राणा एवं मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ. विकास दवे जी के कर कमलों से मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी भोपाल का वर्ष 2002 का अखिल भारतीय 'गजानन माधव मुक्तिबोध पुरस्कार' प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। इसमें अंगवस्त्र और स्मृति चिन्ह के साथ एक लाख रुपये राशि का चैक भी प्रदान किया गया।